| | | | |
|---|---|---|---|
| Beigegebenes<br>Unmittelbar Gegebenes<br>Überlieferung | | Überlieferung | |
| an | | an | Mat 27.1+2<br>Mar 15.1<br>Joh 18.28 |
| den | | Pilatus | |
| Wurfspieß*habend*en<br>*mit* Wurfspieß*en Bewaffnet*en<br>Pilatus | | Und<br>*nachdem* | |
| 1.) | 1.) | die | |
| καὶ<br>Und | *als* | Fülle<br>*von* | |
| pt a2 no ne ig<br>ἀνα-στὰν<br>(*jetzt*) Hinauf-Gestandenseiende<br>(*jetzt*) A*u*f-Gestanden*s*eiende | aj no ne<br>ἅ-παν<br>welche-alle<br>alle*samt* | ih*n*e*n*<br>alle*samt*<br>(*jetzt*)[a] | |
| τὸ<br>die | no ne<br>πλῆθος<br>Fülle | (*allmählich*)[pt]<br>a*u*fgestanden | |
| *prp gn*<br>-<br>*von* | 3 p pl gn ma<br>αὐτῶν<br>ihrer<br>ih*n*e*n* | war,<br>führten | Apg 3.13 |
| 3 p pl a2 ig<br>ἤγαγον<br>(*jetzt*) führten sie | 3 p ak ma<br>αὐτὸν<br>ihn | sie<br>ihn<br>(*jetzt*)[a] | |
| prp ak<br>ἐπὶ<br>auf *zu* | τὸν<br>den | auf<br>den | Mat 20.19<br>Mar 10.33<br>Luk 18.32 |
| ItÜ: ak ma<br>Πιλᾶτον<br>Wurfspieß*habend*en<br>*mit* Wurfspieß*en Bewaffnet*en<br>Pilatus. | | Pilatus<br>*zu*. | |

| | | |
|---|---|---|
| **Durch** *und durch beurteilende für das Gericht* **Hören**<br>**Durch***weg sorgfältig bis zu Ende An***hören**<br>**Verhör** | | **Verhör** |
| **durch** | | **durch** |
| **den** | | **Pilatus** |
| **Wurfspieß***habend***en**<br>*mit* **Wurfspieß***en Bewaffnet***en**<br>**Pilatus** | | **Sie** |
| 2.) | 2.) | **fingen** |
| 3 p pl a1 md ig | | |
| ἤρξαντο | δὲ | (*jetzt*)[a] |
| (*Jetzt*) *individuell* **anfingen sie**<br>(*Jetzt*) *individuell* **begannen sie** | **aber** | **aber** |
| if pr | 3 p gn ma | *individuell* |
| κατ-ηγορεῖν | αὐτοῦ | |
| *all***bezüglich-ab***zu***handeln**<br>**herab-***zu***markten**<br>*wie auf dem* **Markt***gericht*[2]**-herab***zusetz***en**[1]<br>*zu* **verklagen**<br>**an***zu***klagen**<br>**kat-egorisch** *zu beschuldig***en** | **seiner**<br>*ihn* | **an,**<br>*ihn* |
| | | *zu* |
| | | **verklagen,** |
| | pt pr no ma pl | |
| | λέγοντες | *indem* |
| *als* | **Wortende**<br>*die* **Wort***e Gebrauch***ende** | *sie* |
| | **Sagende** | (*wie folgt*)[pt] |
| | | **sag***ten:* |
| | | **Diesen** |
| | pn ak ma | |
| | τοῦτον | **fanden** |
| | **Diesen** | **wir** |
| ℵ, A, R: 1 p pl a2 kt | [B: aS] | |
| \|εὕρομεν\| | [εὕραμεν] | (*de facto*)[a] |
| (*de facto*) **fanden wir** | | *als* |
| | | *einen,* |
| *als* | *einen* | [1]*der* |
| pt pr ak ma | | |
| διά-στρέφοντα | τὸ | [1]**unsere** [d] **Nation** |
| **durch** *und durch-ab***wend***ig Mach***enden**<br>**durch***weg-ab***wend***ig Mach***enden**<br>**durch** *und durch-Ver***kehren***den**<br>**durch***weg-Ver***kehren***den | **die** | [1](*fortlaufend*)[pt] |
| | | [1]*durch* |
| ak ne | ℵ, B: 2 p pl gn | [1]*und* |
| ἔ-θνος | ἡμῶν | |
| **sich-***selbst als Gruppe Ge***setzte**<br>**sich-***selbst als eigen***willig** *Zeigend***e**<br>**a***neinander* **Gewöhnte**<br>**Nation,** | **unserer***seits*<br>**unsere,** | [1]**durch** |
| | | [1]**verkehrt** |
| | | **und** |
| καὶ | | *als* |
| **und** | *als* | *einen,* |
| | pt pr ak ma | |
| | κωλύοντα | *der* |
| *einen* | **Verwehren***den,*<br>**Verhindernden** | (*fortlaufend*)[pt] |
| | | **verwehrt,** |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„*der* **die Nation** (*fortlaufend*)[pt] *durch und* **durch verkehrt**“

Mat 27.11-14
Mar 15.2-5
Joh 18.29-38

1 Kön 21.10
Ps 35.11

Joh 12.19
Apg 24.5

Spr 25.18

| | | | |
|---|---|---|---|
| | א, B: | ak ma pl | |
| | | |φόρους | | Mat 22.21 |
| |die | Erbringliche | [1]Steuern | Mar 12.17 |
| | | |zu Erbringende| | [1]dem | Luk 20.25 |
| | | |zu Tragende| | [1]Kaiser |
| | | |Steuern| | [1]zu |
| | | | [1]geben |
| | | dt ma | [1]und |
| | | Καίσαρι| | [1]als |
| | dem | Fürstlichen| | [1]einen, |
| | | Kaiser| | [1]der |
| | | |Cäsar| | [1](fortlaufend)pt |
| | [A, R: | dt ma] | [1]in |
| | | [Καίσαρι] | [1]Bezug |
| | [dem | Fürstlichen] | [1]auf |
| | | [Kaiser] | [1]sich |
| | | [Cäsar] | [1]selber |
| | [A: | ak ma] | [1]bezüglich |
| | | [φόρον] | [1]des |
| | [das | Erbringliche] | [1]Christus, | Mat 27.42 |
| | [das | zu Erbringende] | [1]des | Mar 15.32 |
| | [das | zu Tragende] | [1]Königs, | Luk 23.39 |
| | [die | Steuer] | [1]die | Joh 19.12 |
| | [R: | ak ma pl] | [1]Worte |
| | | [φόρους] | [1]gebraucht, |
| | [die | Erbringlichen] | [1]dieser |
| | | [zu Erbringenden] | [1]zu |
| | | [zu Tragenden] | [1]sein. |
| | | [Steuern] | |
| | if pr | א, B | |
| | διδόναι | καὶ | |
| | zu geben | und | |
| | | | |
| | | | |
| | | als | |
| | | pt pr ak ma | |
| | | λέγοντα | |
| | einen | Wortenden | [1]aL, |
| | | die Worte Gebrauchenden | Codex Alexandrinus |
| | | Sagenden | schreibt |
| | prp ak | א, A, R: 3 p ak ma | (auch Wortreihenfolge): |
| | | |ἑ-αυτὸν| | „dem |
| | in Bezug auf | |sich-selber| | Kaiser |
| | [B: 3 p ak ma] | prp ak | Steuer |
| | [αὐτὸν] | | zu |
| | [ihn] | bezüglich | geben |
| | [sich] | | und |
| | | ak ma | als |
| | | χριστὸν | einen, |
| | des | sich als Brauchbar Erweisenden | der |
| | | Brauchbargemachten | (fortlaufend)pt |
| | | Bedarfsgerechten | in |
| | | Gemilderten | Bezug |
| | | Gesalbten | auf |
| | | Bestrichenen | sich |
| | | Christus, | selber |
| | | ak ma | bezüglich |
| | | βασιλέα | des |
| | des | Voranschreitenden | Christus, |
| | | den Fortschritt Bestimmenden | des |
| | | auf Veranlassung Aufgestiegenden | Königs, |
| | | Regenten | die |
| | | Regierungsvollmacht Ausübenden | Worte |
| | | Königs, | gebraucht, |
| | | Königsherrschers | dieser |
| | | Basisgebers | zu |
| | | if pr | sein.“ |
| | | εἶναι | |
| | dieser | zu sein. | |

[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„**Steuern** *dem* **Kaiser** *zu* **geben**, *als einen*, *der* (*fortlaufend*)pt *in Bezug auf* **sich** *bezüglich des* **Christus**, *des* **Königs**, *die* **Worte** *gebraucht*, *dieser zu* **sein**.“

[1]aL, **Textus Receptus** schreibt (Wortreihenfolge):
„*dem* **Kaiser Steuern** *zu* **geben und** *als einen*, *der* (*fortlaufend*)pt *in Bezug auf* **sich selber** *bezüglich des* **Christus**, *des* **Königs**, *die* **Worte** *gebraucht*, *dieser zu* **sein**.“

3.) 3.)

| | | |
|---|---|---|
| ὁ | δὲ | [1]Aber |
| Der | aber | [1]der |
| ItÜ: no ma | א, B, P 075: 3 p a1 ig | |
| Πιλᾶτος | \|ἐρ-ώτησεν\| | [1]Pilatus |
| Wurfspieß*habend*e | \|(*jetzt*) Fließendes-ursäch*lich ersuch*te er\| | [1]fragte |
| *mit* Wurfspieß*en Bewaffnet*e | \|(*jetzt*) Fließendes-erbat er\| | [1]ihn |
| Pilatus | \|(*jetzt*) Fließendes-forderte er\| | [1](*jetzt*)[a], |
| | \|(*jetzt*) Rede-erbat er\| | [1]*indem* |
| | \|(*jetzt*) Rede-forderte er\| | [1]*er* |
| | \|(*jetzt*) fragte er\| | [1](*wie folgt*)[pt] |
| | [A, R: 3 p a1 ig] | |
| | [ἐπ-ηρ-ώτησεν] | |
| | [(*jetzt*) *all*gebiets-Fließendes-ursäch*lich ersuch*te er] | |
| | [(*jetzt*) *all*gebiets-Fließendes-erbat er] | |
| | [(*jetzt*) *all*gebiets-Fließendes-forderte er] | |
| | [(*jetzt*) *all*gebiets-Rede-erbat er] | |
| | (*jetzt*) *all*gebiets-Rede-forderte er | |
| | [(*jetzt*) *be*fragte er] | |
| 3p ak ma | pt pr no ma | |
| αὐτὸν | λέγων | [1]sagte: |
| ihn | als Wortender | [1]Du, |
| | *die* Wort*e Gebrauch*ender | [1]bist |
| | Sagender | [1]du |
| | : | [1]der |
| 1 p no | 2 p pr | |
| σὺ | εἶ ὁ | [1]König |
| Du, | bist du der | [1]der |
| no ma | | |
| βασιλεὺς | τῶν | [1]Juden? |
| *Voran*schreitende | der | [1]Der |
| *Fort*schritt *Bestimm*ende | | [1]*Angesprochene* |
| *auf Veranlassung Auf*gestiegene | | [1]aber, |
| Regent | | [1]*der* |
| Regier*ungsvollmacht Ausüb*ene | | [1](*jetzt*)[a] |
| König | | [1](*in der Folge*)[pt] |
| König*sherrscher* | | [1]*infolge* |
| Basis*geb*er | | [1]*von* |
| hebrÜ: aj gn ma pl | | [1]ihm |
| Ἰουδαίων | | [1]*zur* |
| Dankendem *Zugehör*igen | ? | [1]Antwort |
| Bekennendem *Zugehör*igen | | [1]veranlaßt |
| Judäer | | [1]worden |
| Juden | | [1]war, |
| no ma | | [1]gebraucht |
| ὁ δὲ | | [1]*die* |
| Der *Angesprochene* aber *als* | | [1]Worte: |
| pt a1 no ma ps ig | | Du, |
| ἀπο-κριθεὶς | | du |
| (*jetzt*) von-*der Frage her zur Be*urteil*ung Veranlaß*tworden(seiend)er | | sagst |
| (*jetzt*) *zur* Antwort *Veranlaß*tworden(seiend)er | | es. |
| *prp dt* | 3 p dt ma | |
| | αὐτῷ | |
| *infolge von* | ihm | |
| א: 3 p pr | [A, B, R, P 075: 3 p a2 ig / ipe] | |
| \|λέγει\| | [ἔφη] | |
| \|wortet er\| | [(*jetzt*) erklärte er / erklärte er] | |
| \|*die* Wort*e gebraucht* er\| | [(*jetzt*) *sich* äußerte er / *sich* äußerte er] | |
| \|sagt er\| | [(*jetzt*) versicherte er / versicherte er] | |
| | : | |
| 2 p no | 2 p pr | |
| δὺ | λέγεις | |
| Du, | wortest du *es* | |
| | *die* Wort*e gebraucht*st du - | |
| | sagst du *es*. | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**Aber der Pilatus** *be***fragte ihn** (*jetzt*)[a], *indem er* (*wie folgt*)[pt] **sagte**:
**Du, bist du der König der Juden?**
**Der** *Angesprochene* **aber,**
*der* (*jetzt*)[a] (*in der Folge*)[pt] *infolge von* **ihm** *zur* **Antwort** *veranlaßt* **worden war, erklärte** (*jetzt*)[a]
**Du, du sagst** *es*."

[1]aL, **Codex Vaticanus** und **Papyrus 075** schreiben:
„**Aber der Pilatus fragte ihn** (*jetzt*)[a], *indem er* (*wie folgt*)[pt] **sagte**:
**Du, bist du der König der Juden?**
**Der** *Angesprochene* **aber,**
*der* (*jetzt*)[a] (*in der Folge*)[pt] *infolge von* **ihm** *zur* **Antwort** *veranlaßt* **worden war, erklärte** (*jetzt*)[a]
**Du, du sagst** *es*."

1 Mos 49.10
Mat 2.2

Mat 27.37
Mar 15.26
Luk 23.37+38
Joh 19.21+22

Mat 27.11

1 Tim 6.13

ohne (...) a+pt lesbar

| 4.) | | 4.) | |
|---|---|---|---|
| | | | Aber |
| ὁ | δὲ | | der |
| Der | aber | | |
| ItÜ: no ma | | 3 p a2 ig | Pilatus |
| Πιλᾶτος | εἶπεν | | sagte |
| Wurfspießhabende | (*jetzt*) sagte er | | (*jetzt*)[a] |
| *mit* Wurfspießen *Bewaffnete* | | | zu |
| Pilatus | | | den |
| prp ak | | | Hohenpriestern |
| πρὸς | τοὺς | | und |
| zu | den | | *zu* |
| ak ma pl | | | den |
| ἀρχ-ιερεῖς | καὶ | | *Volks*mengen*:* |
| Anfangs-Geweihten | und | | Ich |
| *Rang*anfangs-Priestern | | | finde |
| Hohenpriestern | | | aber |
| | τοὺς | | nicht |
| *zu* | den | | eines |
| ak ma pl | | | *als* |
| ὄχλους | | | *Schuld*ursächliches |
| Belästigenden | *:* | | in |
| Mengen | | | dem |
| *Volks*mengen | | | diesem |
| pna ak ne | | 1 p pr | Menschen. |
| οὐ-δ-ἐν | εὑρίσκω | | |
| Nicht-aber-eines | finde ich | | |
| | | aj ak ne | |
| | αἴτιον | | |
| *als* | Ursächliches | | |
| | *Schuld*ursächliches | | |
| | beschuldigung*swürdiges Verhalten* | | |
| prp dt | | | |
| ἐν | τῷ | | |
| in | dem | | |
| dt ma | | pn dt ma | |
| ἀν-θρ-ώπῳ | τούτῳ | | |
| Hinauf-Gewandt-Eraugenden | diesem. | | |
| empor-ragend-Augenden | | | |
| Hinauf-Gedrehten | | | |
| Mannes-Auge | | | |
| Antlitz[2]-*des* Mannes[1] | | | |
| Angesicht[2]-*des* Mannes[1] | | | |
| Menschen, | | | |

Luk 23.14+22
Joh 18.38

Heb 7.26
1 Petr 2.22

5.) 5.)

| | | |
|---|---|---|
| | no ma pl | |
| οἱ | | δὲ |
| Die | *Angesprochenen* | aber |
| | | 3 p pl ipe |
| | ἐπ-ίσχυον | |
| | **stark***näck***ig**[2]-*dar***auf**[1]-*bestand***en sie** | |
| | pt pr no ma pl | |
| | λέγοντες | ὅτι |
| *als* | **Wortende** | **daß** |
| | *die* **Wort***e Gebrauch***ende** | **:** |
| | **Sagende** | |
| κ: 3 p pr | [κ[2]: aS] | κ, κ[2]: |
| \|ἀνα-σεῖ\| | [ἀνα-σείει] | \|τὸν |
| \|**hinauf-beben** *mach***t er** | | \|**die** |
| \|**je***weils-er***beben** *läß***t er\|** | | |
| \|**aufhetzt er\|** | | |
| \|**aufwiegelt er\|** | | |
| ak ma | [A, B, R: aS | |
| ὄχλον\| | [ἀνα-σείει | τὸν |
| **Belästigende\|** | | **das** |
| \|**Menge\|** | | |
| \|*Volks***menge\|** | | |
| ak ma] | [κ[2], A, B, R: | pt pr no ma] |
| λαὸν] | | [διδάσκων] |
| *Gleich***sprachige]** | [*als* | **Lehrender]** |
| **[Volk]** | | **[Belehrender]** |
| prp gn | aj gn fe | |
| καθ’ | ὅλης | τῆς |
| **herab** | **ganzen** | **des** |
| | | **des** |
| | | **der** |
| hebrÜ: gn fe | κ, B: | |
| Ἰουδαίας | καὶ | |
| **Dankenden** | **und** | *zwar* |
| **Bekennenden** | | |
| **Judäa** | | |
| | | pt a1 no ma md kt |
| | ἀρξάμενος | |
| | (*de facto*) **i***ndividuel***l anfangend** | |
| | (*de facto*) **i***ndividuel***l beginnend** | |
| prp | | hebrÜ: gn fe |
| ἀπὸ | τῆς | Γαλιλαίας |
| **von** | **dem** | **Bezirk** |
| | **der** | **Galiläa** |
| | prp gn | av |
| ἕως | | ὧ-δε |
| **bis** | | **das-aber** |
| | | **hierher.** |

[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus** schreibt:
„**Er hetzt die** *Volks***menge auf herab der ganzen** *Provinz* **Judäa,**
*indem er* (*fortlaufend*)[a] **lehrt,**
**und** *zwar* (*de facto*)[a] **i***ndividuel***l anfangend von der** *Landschaft* **Galiläa bis hierher.**“
[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben („**und** *zwar*“ `fehlt`):
„**Er hetzt das Volk auf herab der ganzen** *Provinz* **Judäa,**
*indem er* (*fortlaufend*)[a] **lehrt,**
(*de facto*)[a] **i***ndividuel***l anfangend von der** *Landschaft* **Galiläa bis hierher.**“
[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„**Er hetzt das Volk auf herab der ganzen** *Provinz* **Judäa,**
*indem er* (*fortlaufend*)[a] **lehrt,**
**und** *zwar* (*de facto*)[a] **i***ndividuel***l anfangend von der** *Landschaft* **Galiläa bis hierher.**“

**Die**
*Angesprochenen*
**aber**
*bestand***en**
**stark***näck***ig**
*dar***auf,**
*indem*
*sie*
(*wie folgt*)[pt]
**sag***ten:*
[1]**Er**
[1]**hetzt**
[1]**die**
[1]*Volks***menge**
[1]**auf**
[1]**herab**
[1]**der**
[1]**ganzen**
[1]*Provinz*
[1]**Judäa,**
[1]**und**
[1]*zwar*
[1](*de facto*)[a]
[1]**i***ndividuel***l**
[1]**anfangend**
[1]**von**
[1]**der**
[1]*Landschaft*
[1]**Galiläa**
[1]**bis**
[1]**hierher.**

Mar 1.39
Luk 4.44

Apg 10.37

*Des*

**Wurfspieß***habend***en**
*mit* **Wurfspieß***en Bewaffnet***en**
**Pilatus'**

**Abstellen**
**Schicken**
**Aposteln**

**zu**

**dem**

**Heroischen**
**Heldenhaften**
***H*erodes**

6.) 6.)

ItÜ: no ma

Πιλᾶτος

*Der* **Wurfspieß***habend***e**
*mit* **Wurfspieß***en Bewaffnet***e**
**Pilatus**

δὲ
**aber,** *als*

ℵ, B, P 075 [A, R: ak fe]

[Γαλιλαίαν]
|*dies*| **[Bezirk]**
**[Galiläa]**

pt a1 no ma ig

ἀκούσας
(*jetzt*) **Gehörthabender,**

3 p a1 ig

ἐπ-ηρ-ώτησεν
(*jetzt*) *all***gebiets-Fließendes-ursäch***lich ersuch***te er**
(*jetzt*) *all***gebiets-Fließendes-erbat er**
(*jetzt*) *all***gebiets-Fließendes-forderte er**
(*jetzt*) *all***gebiets-Rede-erbat er**
(*jetzt*) *all***gebiets-Rede-forderte er**
(*jetzt*) **erfragte er,**

ℵ, A, R, P 075

εἰ |ὁ|
**ob** **|der|**
**|der|**
**|der|**
**|das|**
**|das|**
**|das|**
**|der|**

[B] no ma

ἄν-θρ-ωπος
[*dieser*] **Hinauf-Gewandt-Eraugende**
[*dieser*] **empor-ragend-Augende**
[*dieser*] **Hinauf-Gedrehte**
[*dieser*] **Mannes-Auge**
[*dieses*] **Antlitz**[2]*-des* **Mannes**[1]
[*dieses*] **Angesicht**[2]*-des* **Mannes**[1]
[*dieser*] **Mensch**

aj no ma

Γαλιλαῖός
*ein* *Zugehör***iger** *des* **Bezirks**
**Galiläer**

3 p pr

ἐστιν
**ist er.**

[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:

„**Pilatus aber,**
*nachdem er dies* (*jetzt*)[a] **gehört hat***te*,
**erfragte er** (*jetzt*)[a],
**ob** *dieser* **Mensch** *ein* **Galiläer ist.**"

**Pilatus'**
**Schicken***
**zu**
***H*erodes**

[1]**Pilatus**
[1]**aber,**
[1]*nachdem*
[1]*er*
[1]*dies*
[1](*jetzt*)[a]
[1]**gehört**
[1]**hat***te*,
[1]**erfragte**
[1]**er**
[1](*jetzt*)[a],
[1]**ob**
[1]**der**
[1]**Mensch**
[1]*ein*
[1]**Galiläer**
[1]**ist.**

*e: „einmalig", daher „Schicken", „Senden" wäre mehrmals

[1]aL,
**Codex Alexandrinus**
und
**Textus Receptus**
schreiben:
„**Pilatus**
**aber,**
*nachdem*
*er*
**Galiläa**
(*jetzt*)[a]
**gehört**
**hat***te*,
**erfragte**
**er**
(*jetzt*)[a],
**ob**
**der**
**Mensch**
*ein*
**Galiläer**
**ist.**"

7.) 7.)

| | | | |
|---|---|---|---|
| | καὶ | | Und |
| | Und | *als* | *als* |
| | | pt a2 no ma kt | |
| | ἐπι-γνοὺς | | *er* |
| | (*de facto*) *all*gebiets o. *dar*auf*hin*-Gewußthabender | | (*de facto*)[a] |
| | (*de facto*) gebiets*umfassend* o. *dar*auf*hin-Er*kannthabender | | (*allmählich*)[pt] |
| | (*de facto*) Erkannthabender, | | erkannt |
| | | prp ak | |
| ὅτι | ἐκ | τῆς | hatte, |
| daß | aus | dem | daß |
| | | gn fe | |
| ἐξ-ουσίας | | | er |
| *Bereichs*, *was* aus-*dem* Sein *ist* | | *des* | aus |
| Autorität*sbereich* | | | dem |
| Vollmacht*sbereich* | | | Autorität*sbereich** |
| gn ma | 3 p pr | 3 p a1 ig | |
| Ἡρῴδου | ἐστὶν | ἀν-έπεμψεν | *des* |
| Heroischen | ist er, | (*jetzt*) hinauf-sandte er | *Herodes* |
| Heldenhaften | | (*jetzt*) wieder-sandte er | ist, |
| *Herodes* | | | [1]sandte |
| 3 p ak ma | prp ak | א, A, R | |
| αὐτὸν | πρὸς | | [1]er |
| ihn | zu | \|*dem*\| | [1]ihn |
| [B, P 075] | ak ma | | [1](*jetzt*)[a] |
| [τὸν] | Ἡρῴδην | | [1]hinauf |
| [dem] | Heroischen | *dem* | [1]zu |
| | Heldenhaften | | [1]*dem* |
| | *Herodes*, | | [1]*Herodes*, |
| pt pr ak ma | | urspr. א: prp ak | [1]*dem* |
| ὄντα | καὶ | \|κατ' | [1]auch |
| *zuständig* seienden | auch | \|*in* Bezug *auf* | [1]ih*m* |
| | | \|gemäß | [1]gemäß |
| 3 p ak ma | | [(א), א², A, B, R, P 075: *prp ak* | [1]in |
| αὐτὸν\| | | | [1]denselben |
| ihn\| | | [*hinein in* | [1]Tagen |
| ih*m*\| | | [[h]*für* | [1]in |
| 3 p ak ma] | prp dt | | [1]*der* |
| αὐτὸν] | ἐν | | [1]*Majorität* |
| ihn] | in | *der* | [1]*der* |
| *den*selben] | | | [1]*Stadt* |
| grÜ: dt fe pl | | prp dt | [1]Jerusalem |
| Ἱεροσ-ο-λύμοις | ἐν | | [1]*zuständig** |
| Weihe*stätte*-gänzlich-*ent*lösten | in | | [1]seienden. |
| Weihe*stätte*-gänzlich-gelösten | | | |
| Jerus-a-lem*a* | | | |
| א: 3 p pl dt fe | | [א², A, B, R, P 075: pn dt fe pl] | |
| \|αὐταῖς\| | | [ταύταις] | |
| \|selben\| | | [diesen] | |
| | | dt fe pl | |
| ταῖς | | ἡμέραις | |
| den | | Tagen. | |

*e: siehe unten

Luk 3.1
Apg 4.27

*e: siehe oben

[1]aL, **Codex Sinaiticus** schreibt:
„**sandte er ihn** (*jetzt*)[a] **hinauf zu** *dem* *H*erodes,
*dem* **auch** [h]*für* **ihn in denselben Tagen in** *der* *Majorität* *der Stadt* **Jerusalem** *zuständig* **seienden.**“
[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus**, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**sandte er ihn** (*jetzt*)[a] **hinauf zu** *dem* *H*erodes,
*dem* **auch** [h]*für* **ihn in den diesen Tagen in** *der* *Majorität* *der Stadt* **Jerusalem** *zuständig* **seienden.**“
[1]aL, **Codex Vaticanus** und **Papyrus 075** schreiben:
„**sandte er ihn** (*jetzt*)[a] **hinauf zu dem** *H*erodes,
*dem* **auch** [h]*für* **ihn in den diesen Tagen in** *der* *Majorität* *der Stadt* **Jerusalem** *zuständig* **seienden.**“

| 8.) | | | 8.) |
|---|---|---|---|
| | [κ², A, B, R] | no ma | |
| ὁ | [δὲ] | Ἡρῴδης | |
| Der | [aber] | Heroische Heldenhafte | |
| | | Herodes | |
| | | pt a2 no ma ig | |
| | | ἰδὼν | |
| als | | (jetzt) Gewahrthabender | |
| | | (jetzt) Wahrgenommenhabender | |
| | | hebrÜ: ak ma | |
| τὸν | | Ἰη-σοῦν | |
| den | | Er macht Werden-bedeutet Rettung<br>Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung<br>werdenmachenden-Rettrufer<br>Werdenmachenden,-der Rettung ist,<br><JHWH>,-der Rettung ist,<br><JHWHs>-Rettrufer | |
| | | Je-sus, | |
| | | Jöho-schua | |
| 3 p a1 ps kt | av | 3 ipe | |
| ἐχάρη | λίαν | ἦν | |
| (de facto) erfreut wurde er | sehr, | war er | |
| | κ, B: prp gn | aj gn ma pl | |
| γὰρ | \|ἐξ | ἱκ-ανῶν | |
| denn | \|ausgrund | hinauf-reichend vieler | |
| | | \|hinreichend vieler\| | |
| gn ma pl | | pt pr no ma | |
| χρόνων | | θέλων\| | |
| Zeiten | ein | den Willen Habender\| | |
| [A, R: | pt pr no ma | prp gn | |
| | [θέλων | ἐξ | |
| [ein | den Willen Habender | ausgrund | |
| aj gn ma] | if a2 kt | 3 p ak ma | |
| ἱκ-ανοῦ] | ἰδεῖν | αὐτὸν | |
| hinauf-reichend vielem] | (de facto) zu gewahren | ihn, | |
| [hinreichend vielem], | (de facto) wahrzunehmen | | |
| prp ak | ak ne | | |
| διὰ | τὸ | | |
| wegen | das, | weil | |
| | des, | | |
| | prp ak | 3 p ak ma | |
| | | | |
| bestimmt war es | hinein in | ihn, | |
| | hfür | | |
| | if pr | [A, R: aj ak ne pl] | |
| ἀκούειν | | [πολλὰ] | |
| zu hören | | [viele | |
| | prp gn | 3 p gn ma | |
| | περὶ | αὐτοῦ | |
| Dinge] | betreffs | seiner | |
| | betreffend | ihn. | |

[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus** und **Codex Vaticanus** schreiben:
„**Der** *H*erodes,
*als er* **aber den Jesus** (*jetzt*)[a] (*allmählich*)[pt] **wahrgenommen hat***te*,
**wurde er** (*de facto*)[a] **sehr** *er***freut,**
**denn er war aus***grund hin***reichend** *vieler* **Zeiten** *ein den* **Will***en Hab***ender,**
**ihn** (*de facto*)[a] **wahr***zu***nehmen,**
**deswegen,**
*weil es* [h]*für ihn bestimmt war*,
**i***hn* **betreff***end zu* **hören.**“

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben (`auch Wortreihenfolge`):
„**Der** *H*erodes,
*als er* **aber den Jesus** (*jetzt*)[a] (*allmählich*)[pt] **wahrgenommen hat***te*,
**wurde er** (*de facto*)[a] **sehr** *er***freut,**
**denn er war** *ein den* **Will***en Hab***ender,**
**aus***grund hin***reichend** *vielem*, **ihn** (*de facto*)[a] **wahr***zu***nehmen,**
**ihn** (*de facto*)[a] **wahr***zu***nehmen,**
**deswegen,**
*weil es* [h]*für ihn bestimmt war*,
**viele** *Dinge* **i***hn* **betreff***end zu* **hören.**“

[1]Der
[1]*H*erodes,
[1]*als*
[1]*er*
[1]den
[1]Jesus
[1](*jetzt*)[a]
[1](*allmählich*)[pt]
[1]wahrgenommen
[1]hat*te*,
[1]wurde
[1]er
[1](*de facto*)[a]
[1]sehr
[1]*er*freut,
[1]denn
[1]er
[1]war
[1]aus*grund*
[1]*hin*reichend
[1]*vieler*
[1]Zeiten
[1]*ein*
[1]*den*
[1]Will*en*
[1]*Hab*ender,
[1]ihn
[1](*de facto*)[a]
[1]wahr*zu*nehmen, — Joh 12.21
[1]deswegen,
[1]*weil*
[1]*es*
[1h]*für*
[1]*ihn*
[1]*bestimmt*
[1]*war*,
[1]ihn — Mat 14.1 / Mar 6.14 / Luk 9.9
[1]betreff*end*
[1]*zu*
[1]hören. — Apg 25.22

ohne (...) [a+pt] lesbar

| | | |
|---|---|---|
| | | 3 p ipe |
| καὶ | | ἤλπιζέν |
| Und | | erwartete er |
| | | hoffte er |
| | aj ak ne | ak ne |
| τι | | σημεῖον |
| irgend | | Zeichen |
| [ir]ein | | Signal |
| [ir]eine | | *An*deutung |
| | | if a2 kt |
| | ἰδεῖν | |
| | (*de facto*) *zu* gewahren | |
| | (*de facto*) wahr*zu*nehmen, | |
| | | prp gn |
| | | ὑπ’ |
| *als* | | von *her* |
| | | von |
| | 3 p gn ma | pt pr ak ne md/ps dp |
| αὐτοῦ | | γινόμενον |
| seiner | | *individuell* *Gewirkt*werdendes |
| i*hm* | | *individuell* Geschehendes |
| | | sich Entwickelndes |
| | pt pr ak ne md/ps dp (Zustand) | pt pr ak ne md/ps dp (Vorgang) |
| | werdenge*mach*tseiendes | Werdenge*mach*twerdendes. |
| | *in das* Geschehen Ge*bracht*seiendes | *in das* Geschehen Ge*bracht*werdendes |
| | *in die* Entwicklung Ge*bracht*seiendes | *in die* Entwicklung Ge*bracht*werdendes |

Und

er

erwartete

(*de facto*)[a]

[ir]ein

Zeichen

wahr*zu*nehmen,

*das*

von

i*hm*

*individuell*

(*im weiteren Zeitverlauf*)[pt]

*gewirkt*

wird.

| 9.) | | | 9.) |
|---|---|---|---|
| | 3 p ipe | | [ℵ², A, B, D, R] |
| | ἐπ-ηρ-ώτα | | [δὲ] |
| | *All*gebiets-Fließendes-ursäch*lich ersuch*te er | | [aber] |
| | *All*gebiets-Fließendes-erbat er | | |
| | *All*gebiets-Fließendes-forderte er | | |
| | *All*gebiets-Rede-erbat er | | |
| | *All*gebiets-Rede-forderte er | | |
| | *Be*fragte er | | |
| | 3 p ak ma | prp dt | dt ma pl |
| | αὐτὸν | ἐν | λόγοις |
| | ihn | in | Worten, |
| | | in*folge von* | Erwogenen |
| | | [i]mit | Erwählten |
| | | | Rechnung*slegung*en |
| | | | Log*ik*en |
| | aj dt ma pl | 3 p no | |
| | ἱκ-ανοῖς | αὐτὸς | δὲ |
| | hinauf-reichend *vielen* | er | aber |
| | *hin*reichend *vielen*, | | |
| | tauglichen | | |
| | ℵ, D | | [A, B, D, R: pn ak ne] |
| | \|οὐκ\| | | [οὐ-δ-ὲν] |
| | \|nicht\| | | [nicht-aber-eines] |
| | | | 3 p a1 md kt |
| | ἀπ-εκρίνατο | | |
| | (*de facto*) i*ndividuel*l von *der Frage-be*urteilte er | | |
| | (*de facto*) i*ndividuel*l antwortete er | | |
| | | | 3 p dt ma |
| | αὐτῷ | | |
| | ihm. | | |

[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus** schreibt:
„Er *be*fragte ihn aber [i]mit *hin*reichend *vielen* Worten,
aber er, er antwortete ihm (*de facto*)[a] i*ndividuel*l nicht."
[1]aL, **Codex Alexandrinus**, **Codex Vaticanus** und **Textus Receptus** schreiben:
„Er *be*fragte ihn aber [i]mit *hin*reichend *vielen* Worten,
aber er, er antwortete ihm (*de facto*)[a] i*ndividuel*l nicht aber eines."
[1]aL, **Codex Bezae** schreibt:
„Er *be*fragte ihn aber [i]mit *hin*reichend *vielen* Worten,
aber er, er antwortete ihm (*de facto*)[a] i*ndividuel*l nicht, *ja*, nicht aber eines."

| 10.) | | | 10.) |
|---|---|---|---|
| | 3 p pl plpe | | |
| | εἱσ-τήκεισαν | δὲ | |
| | Stand ge*omm*en hatten sie | aber | {*ebenfalls*} |
| | Gestanden hatten sie | | |
| | | | no ma pl |
| | | οἱ | ἀρχ-ιερεῖς |
| | {*dort*} | die | Anfangs-Geweihten |
| | | | *Rang*anfangs-Priester |
| | | | Hohenpriester |
| | | | no ma pl |
| | καὶ | οἱ | γραμματεῖς |
| | und | die | Schrift*kenn*er |
| | | | Schrift*kund*igen |
| | | | Schrift*gelehr*ten |
| | | | av |
| | εὐ-τόνως | | |
| | wohl-gestreckt | | *als* |
| | wohl*weislich*-angespannt, | | |
| | | | pt pr no ma pl |
| | κατ-ηγοροῦντες | | αὐτοῦ |
| | *all*bezüglich-Abhandelnde | | seiner |
| | Herab-Marktende | | i*hn*. |
| | Herab*setz*ende-*wie auf dem* Markt*gericht* | | |
| | Anklagende | | |
| | Verklagende | | |
| | kat-egorisch *Beschuldig*ende | | |

[1]Er
[1]*be*fragte
[1]ihn
[1i]mit
[1]*hin*reichend
[1]*vielen*
[1]Worten,
[1]aber
[1]er,
[1]er
[1]antwortete
[1]ihm
[1](*de facto*)[a]
[1]i*ndividuel*l
[1]nicht.

*Es*
hatten
aber
{*ebenfalls*}
die
Hohenpriester
und
die
Schrift*gelehrt*en
wohl*weislich*
angespannt
{*dort*}
gestanden,
*als*
i*hn*
Verklagende.

Jes 53.7
Ps 39.2

(Mat 16.21)
Mar 8.31
Luk 9.22

Apg 25.7

ohne (...) a+pt lesbar

| 11.) | | 11.) | |
|---|---|---|---|
| | | | [1]*Als* |
| | | | [1]**auch** |
| | *Als* | | [1]**der** |
| | | | *Herodes* |
| | pt a1 no ma ig | | [1]*ihn* |
| | ἐξ-ου-θ-ενήσας | | [1]**außerdem** |
| | (*jetzt*) **aus***schließend-zu* **nicht-aber-einem Ge***mach***thabender** | | [1]**zusammen** |
| | (*jetzt*) **Benichtigthabender** | | [1]*mit* |
| | (*jetzt*) *als* **nicht***swürd***ig** *An***ge***seh***enhabender** | | [1]**seinen** [d] **Heer***abteil***ungen** |
| | | | [1](*jetzt*)[a] |
| | ℵ, ℵ² | | [1](*allmählich*)[pt] |
| | \|τε\| | | [1]*als* |
| | \|**außerdem**\| | | [1]**nicht***swürd***ig** |
| | | | [1]*an***ge***seh***en** |
| | ℵ, ℵ² | | [1]**hat***te***,** |
| | \|καὶ\| | | **und** |
| | \|**auch**\| | | *als* |
| | | | *er* |
| | ℵ | | *ihn* |
| | | | (*jetzt*)[a] |
| | \|*ihn*\| | | (*fortlaufend*)[pt] |
| | | | *ver***höhnt** |
| | [A, B, R] | | **hat***te***,** |
| | [δὲ] | | |
| | [**aber**] | | |
| | | | |
| | [ℵ², A, B, R: 3 p ak ma] | | |
| | [αὐτὸν] | | |
| | [**ihn**] | | |
| | | | |
| | | | |
| | ὁ | | |
| | **der** | | |
| | no ma | | |
| | Ἡρῴδης | | |
| | **Heroische** | | |
| | **Heldenhafte** | | |
| | **Herodes** | | |
| | | | |
| | prp dt | | |
| | σὺν | | |
| | **samt** | | |
| | **zusammen** *mit* | | |
| | | | |
| | | | |
| | τοῖς | | |
| | **den** | | |
| | | | |
| | dt ne pl | | |
| | στρατεύμασιν | | |
| | *Abteil***ungen** *von* **Krieg***sdienern* | | |
| | **Krieg***svölk***ern** | | |
| | **Heer***abteil***ungen,** | | |
| | **Heer***scha***ren** | | |
| | | | |
| | 3 p gn ma | | |
| | αὐτοῦ | | |
| | **seiner***seits* | | |
| | **seinen** | | |
| | | | |
| | | | |
| | καὶ | | |
| | **und** | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | *als* | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | *ihn* | | |
| | | | |
| | pt a1 no ma ig | | |
| | ἐμ-παίξας | | |
| | (*jetzt*) **in***nen***-Verletzthabender** | | |
| | (*jetzt*) **In***nen***-Spiel Ge***trieb***enhabender** | | |
| | (*jetzt*) *Ver***höhnt***habender* | | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus**, **Codex Vaticanus** und **Textus Receptus** schreiben („**außerdem**“ `fehlt`):
„*Als* **aber der** *H***erodes ihn zusammen** *mit* **seinen** [d] **Heer***abteil***ungen**
(*jetzt*)[a] (*allmählich*)[pt] *als* **nicht***swürd***ig** *an***ge***seh***en hat***te***,**“

[1]aL,
**2. Korrektor Codex Sinaiticus**
schreibt:
„*Als*
**auch**
**der**
*H***erodes**
**ihn**
**außerdem**
**zusammen**
*mit*
**seinen** [d] **Heer***abteil***ungen**
(*jetzt*)[a]
(*allmählich*)[pt]
*als*
**nicht***swürd***ig**
*an***ge***seh***en**
**hat***te***,**“

Jes 53.3

Ps 22.7+8
Ps 69.20
Mat 20.19
Mar 10.34
Luk 18.32

| | | |
|---|---|---|
| | | [1]sandte |
| *als* | *ihn* | [1]er |
| | pt a2 no ma ig | [1]ihn |
| | περι-βαλὼν | [1](*jetzt*)[a], |
| | (*jetzt*) Um-Worfenhabender | [1]*nachdem* |
| | (*jetzt*) *mit einem* **um***hangähnlichem-Über***wurf** *Aus***ge***statt***ethabender** | [1]*er* |
| | *prp ak* | [1]*ihn* |
| | *hinein in* | [1]*hinein* |
| | ak fe | [1]*in* |
| | ἑσθῆτα | *ein* |
| *ein* | **Bekleidetes,** | [1]glänzendes |
| | aj ak fe | [1]Bekleidetes |
| | λαμπρὰν | [1](*jetzt*)[a] |
| *ein* | Glänzendes, | [1](*fortlaufend*)[pt] |
| | Prunkendes | [1]*mit* |
| ⸗, P 075: 3 p a1 ig | [⸗², A, B, R: 3 p a1 ig] | [1]*einem* |
| \|ἔπεμψεν\| | [ἀν-έπεμψεν] | [1]**um***hangähnlichem* |
| \|(*jetzt*) *zurück***sandte er**\| | [(*jetzt*) hinauf-sandte er] | [1]*Über***wurf** |
| | [(*jetzt*) wieder-sandte er] | [1]*aus***ge***statt***et** |
| 3 p ak ma | ⸗, B, R | [1]**hatte,** |
| αὐτὸν | \|τῷ\| | [1]**dem** |
| **ihn** | **\|dem\|** | [1]**Pilatus** |
| [A] | ItÜ: dt ma | [1]*zurück***.** |
| | Πιλάτῳ | |
| [*dem*] | **Wurfspieß***habend***en** | |
| | *mit* **Wurfspieß***en Bewaffnet***en** | |
| | Pilatus. | |

[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus**, **Codex Vaticanus** und **Textus Receptus** schreiben
„**sandte er ihn** (*jetzt*)[a],
*nachdem er ihn hinein in ein* **glänzendes Bekleidetes**
(*jetzt*)[a] (*fortlaufend*)[pt] *mit einem* **um***hangähnlichem Über***wurf** *aus***ge***statt***et hatte,**
**wieder dem Pilatus.**“
[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt
„**sandte er ihn** (*jetzt*)[a],
*nachdem er ihn hinein in ein* **glänzendes Bekleidetes**
(*jetzt*)[a] (*fortlaufend*)[pt] *mit einem* **um***hangähnlichem Über***wurf** *aus***ge***statt***et hatte,**
**wieder** *dem* **Pilatus.**“

Mat 27.28
Mar 15.17
Luk Joh 19.2

| 12.) | | 12.) |
|---|---|---|
| | 3 p pl a2 md dp kt | |
| ἐγένοντο | δὲ | |
| (*De facto*) *individuell* **wurden sie** | **aber** | |
| (*De facto*) **sich entwickelten sie** | | |
| | no ma pl | |
| | φίλοι | |
| - | **Freunde** | |
| *als* | | |
| ὅ | τε | |
| **der** | **außerdem** | |
| | א, B: no ma | |
| Ἡρῴδης | καὶ | |
| **Heroische** | **und** | |
| **Heldenhafte** | | |
| ***Herodes*** | | |
| A, R = 2 | | |
| | ItÜ: no ma | |
| ὁ | Πιλᾶτος | |
| **der** | **Wurfspieß***habend***e** | |
| | *mit* **Wurfspieß***en Bewaffnet***e** | |
| | **Pilatus** | |
| | A, R = 1 | |
| prp dt | aj dt fe | |
| ἐν | αὐτῇ | |
| **in** | **selben** | |
| | dt fe | |
| τῇ | ἡμέρᾳ | |
| **dem** | **Tag** | |
| prp gn | pn gn ma pl | |
| μετ' | ἀλλήλων | |
| **mit** | ***ein*ander,** | |
| | א: 3 p pl ipe md/ps | |
| \|προ-ὑπ-ἦρχοντο\| | | |
| \|*individuell* **vorher-***als Ausgangspunkt und Daseinsgrundlage* **unten-anfingen sie** | | |
| \|*individuell* **vorher-***als Ausgangspunkt und Daseinsgrundlage* **unten-begannen sie** | | |
| \|*individuell* **zuerst-***der Herkunft nach leb***ten sie** | | |
| | 3 p pl ipe md/ps (Vorgang) | |
| *zum* **vorher-***als Ausgangspunkt und Daseinsgrundlage* **unten-Anfangen** *veranlaß***t wurden sie\|** | | |
| *zum* **vorher-***als Ausgangspunkt und Daseinsgrundlage* **unten-Beginnen** *veranlaß***t wurden sie\|** | | |
| *zum* **zuerst-***der Herkunft nach Leb***en** *veranlaß***t wurden sie\|** | | |
| | [א², A, B, R: 3 p pl ipe] | |
| **[προ-ὑπ-ἦρχον]** | | |
| **[vorher-***als Ausgangspunkt und Daseinsgrundlage* **unten-anfingen sie]** | | |
| **[vorher-***als Ausgangspunkt und Daseinsgrundlage* **unten-begannen sie]** | | |
| **[zuerst-***der Herkunft nach leb***ten sie]** | | |
| γὰρ | | |
| **denn** | *als* | |
| prp dt | dt fe | |
| ἐν | ἔχ-θρᾳ | |
| **in** | *zu* **Tilgen²-Habende¹** | |
| | **Feindschaft** | |
| pt pr no ma pl | prp ak | |
| ὄντες | πρὸς | |
| **seiende** | **zu** | |
| א, א², B: 3 p pl ak ma | [A, R: 3 p pl ak ma] | |
| \|αὐτούς\| | [ἑ-αυτούς] | |
| \|**sie**\| | **[sich-selber].** | |
| \|**si***ch***\|** | | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben
(aktiv statt md/ps, auch Wortreihenfolge):
„**Außerdem wurden der Pilatus und der** *Herodes*
(*de facto*)[a] *individuell* **in demselben Tag mit***ein***ander Freunde,**
**denn zuerst** *leb***ten sie** *der* **Herkunft** *nach als* **zu sich selber in Feindschaft seiende.“**

[1]**Außerdem**
[1]**wurden**
[1]**der**
[1]*Herodes*
[1]**und**
[1]**der**
[1]**Pilatus**
[1](*de facto*)[a]
[1]*individuell*
[1]**in**
[1]**demselben**
[1]**Tag**
[1]**mit***ein***ander**
[1]**Freunde,**
[1]**denn**
[1]**zuerst**
[1]*leb***ten**
[1]**sie**
[1]*individuell*
[1]*der*
[1]**Herkunft**
[1]*nach*
[1]*als*
[1]**zu**
[1]**si***ch*
[1]**in**
[1]**Feindschaft**
[1]**seiende.**

Apg 4.27

1 Mos 3.15
(vgl.
ps - Variante)

[1]aL,
**2. Korrektor Codex Sinaiticus**
und
**Codex Vaticanus**
schreiben
(aktiv statt md/ps:
„**Außerdem**
**wurden**
**der**
**Pilatus**
**und**
**der**
*Herodes*
(*de facto*)[a]
*individuell*
**in**
**demselben**
**Tag**
**mit***ein***ander**
**Freunde,**
**denn**
**zuerst**
*leb***ten**
**sie**
*der*
**Herkunft**
*nach*
*als*
**zu**
**si***ch*
**in**
**Feindschaft**
**seiende.“**

| | | |
|---|---|---|
| Hand*hoch*strecken<br>Wahl<br>Abstimmung | | Wahl |
| zwischen | | zwischen |
| Übersetzung siehe Text<br>Jesus | | Jesus |
| und | | und |
| Übersetzung siehe Text<br>Barabbas | | Barabbas |
| 13.) | 13.)<br>ltÜ: no ma | Pilatus |
| *Der* | Πιλᾶτος<br>Wurfspieß*habend*e<br>*mit* Wurfspieß*en Bewaffnet*e<br>Pilatus | aber, |
| | | *nachdem* |
| δὲ<br>aber, | *als* | (*de facto*)[a] |
| | ✖: pt a2 no ma md kt | (*im weiteren Zeitverlauf*)[pt] |
| |συν-καλεσάμενος|<br>(*de facto*) i*ndividuel*l Zusammen-Gerufenhabender<br>(*de facto*) i*ndividuel*l Zusammen-Berufenhabender<br>(*de facto*) i*ndividuel*l *ins*gesamt-*Ein*berufenhabender<br>(*de facto*) i*ndividuel*l *ins*gesamt-Eingeladenhabender | i*ndividuel*l |
| | [A, B, R: aS]<br>[συγ-καλεσάμενος] | die<br>Hohenpriester |
| | ak ma pl | und |
| τοὺς<br>die | ἀρχ-ιερεῖς<br>Anfangs-Geweihten<br>*Rang*anfangs-Priester<br>Hohenpriester | die |
| | | Fürsten |
| καὶ<br>und | τοὺς<br>die | und |
| | ak ma pl | das |
| ἄρχοντας<br>Anfänglichen<br>*Rang*anfänglichen<br>*am* Anfang *Stehend*en<br>Fürsten | καὶ<br>und | Volk |
| | | zusammengerufen |
| | ak ma | hat*te*, |
| τὸν<br>das | λαὸν<br>*Gleich*sprachige<br>Volk, | |

Mat 27.15-31
Mar 15.6-20
Joh 18.38-19.16

| 14.) | | 14.) |
|---|---|---|
| | | 3 p a2 ig |
| | εἶπεν | |
| | (*jetzt*) **sagte** er | |
| | | |
| prp ak | | 3 p pl ak |
| πρὸς | αὐτούς | |
| zu | sie | |
| | i*hnen* | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | : | |
| | | |
| 2 p pl a1 kt | | 3 p dt ma |
| προσ-ηνέγκατέ | μοι | |
| (*de facto*) **zu-gebracht** *habt* ihr | mir | |
| (*de facto*) zu-getragen *habt* ihr | | |
| | | |
| | | ak ma |
| τὸν | ἄν-θρ-ωπον | |
| den | Hinauf-Gewandt-Eraugenden | |
| | empor-ragend-Augenden | |
| | Hinauf-Gedrehten | |
| | Mannes-Auge | |
| | Antlitz[2]-*des* Mannes[1] | |
| | Angesicht[2]-*des* Mannes[1] | |
| | **Menschen**, | |
| | | |
| pn ak ma | | |
| τοῦτον | ὡς | |
| diesen, | als | |
| | | |
| | | pt pr ak ma |
| | ἀπο-στρέφοντα | |
| *einen* | **Ab-Wendenden** | |
| | Weg-Wendenden | |
| | Ab-Kehrenden | |
| | Apo-Strophierenden | |
| | | |
| | | ak ma |
| τὸν | λαόν | |
| das | *Gleich*sprachige | |
| | **Volk**. | |
| | | |
| | | 2 p a2 i! md ig / ij |
| καὶ | ἰδοὺ | |
| Und | (*jetzt*) i*ndividuel*l **gewahre** du | |
| | (*jetzt*) i*ndividuel*l wahrnehme du | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | ! | |

sagte
er
(*jetzt*)[a]
zu
i*hnen:*
Ihr
*habt*
zu
mir
(*de facto*)[a]
den
diesen
Menschen
*als*
*einen*
gebracht,
*der*
(*fortlaufend*)[pt]
das
Volk
abwendet.
- Und
nimm
(*jetzt*)[a]
i*ndividuel*l
wahr! -

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 p no | | | |
| ἐγὼ | | | |
| Ich, | *als* | | |
| prp gn | *prp gn* | | |
| ἐν-ώπιον | | | |
| im-Auge | - | | |
| | *von* | | |
| 2 p pl gn | pt a1 no ma kt | | |
| ὑμῶν | ἀνα-κρίνας | | |
| euer | (*de facto*) **herauf***holend-Be***urteilthabender** | | |
| eu*ch* | (*de facto*) **herauf***holend-***Gerichtethabender** | | |
| | (*de facto*) **Ermittelthabender,** | | |
| ℵ, B: aj ak ne | [A, R: aS] | | |
| \|οὐ-θ-ὲν\| | [οὐ-δ-ὲν] | | |
| nicht-aber-eines | | | |
| 1 p a2 kt | prp dt | | |
| εὗρον | ἐν | | |
| (*de facto*) **gefunden** *habe* **ich** | **in** | | |
| | dt ma | | |
| τῷ | ἀν-θρ-ώπῳ | | |
| dem | Hinauf-Gewandt-Eraugenden<br>empor-ragend-Augenden<br>Hinauf-Gedrehten<br>Mannes-Auge<br>Antlitz[2]-*des* Mannes[1]<br>Angesicht[2]-*des* Mannes[1] | | |
| | Menschen, | | |
| pn dt ma | | | |
| τούτῳ | | | |
| diesem, | *als* | | |
| | aj ak ne | | |
| | αἴτιον | | |
| *ein* | Ursächliches | | |
| | *Schuld***ursächliches** | | |
| | beschuldigung*swürdiges Verhalten* | | |
| *prp gn* | pn gn ne pl | | |
| | ὧν | | |
| *betreffs* | welcher | | |
| | [w]derer | | Luk 23.4+22 |
| | 2 p pl pr | | |
| | κατ-ηγορεῖτε | | |
| *Dinge* | *all***bezüglich-abhandelt ihr** | | |
| - | herab-marktet ihr | | |
| | *wie auf dem* **Markt***gericht*[2]**-herab***setzt*[1] **ihr** | | |
| | verklagt ihr | | |
| | anklagt ihr | | |
| | kat-egorisch *beschuldig***t ihr** | | |
| [B, R, P 075: prp gn] | 3 p gn ma | | |
| [κατ'] | αὐτοῦ | | |
| [herab] | seiner | | |
| [gegen] | i*hn*. | | |

| |
|---|
| **Ich,** |
| *als* |
| **ich** |
| **im** |
| **Auge** |
| *von* |
| **eu***ch* |
| (*de facto*)[a] |
| (*fortlaufend*)[pt] |
| **ermittelt** |
| **habe,** |
| *habe* |
| **ich** |
| (*de facto*)[a] |
| **nicht** |
| **aber** |
| **eines** |
| *als* |
| *ein* |
| **in** |
| **dem** |
| **diesem** |
| **Menschen** |
| *Schuld***ursächliches** |
| **gefunden,** |
| *betreffs* |
| [w]**derer** |
| **ihr** |
| **[gegen]** |
| i*hn* |
| **verklagt.** |

| 15.) | | 15.) |
|---|---|---|
| ἀλλ’ | οὐ-δὲ | |
| *Etwas* **anderes** *war bestimmt* | **nicht-aber** *auch* | |
| **Jedoch** | | |
| | | no ma |
| | Ἡρῴδης | |
| *der* | **Heroische Heldenhafte** | |
| | *H*erodes, | |
| ϰ, B: 3 p a1 kt | | |
| \|ἀν-έπεμψεν | γὰρ | |
| \|(*de facto*) hinauf-gesandt *hat* er | denn | |
| \|(*de facto*) wieder-gesandt *hat* er\| | | |
| 3 p ak ma | | prp ak |
| αὐτὸν | πρὸς | |
| ihn | zu | |
| 1 p ak | | [A, R: 1 p a1 kt |
| ἡμᾶς\| | [ἀν-έπεμψα | |
| uns\| | [(*de facto*) hinauf-gesandt *habe* ich | |
| | [(*de facto*) wieder-gesandt *habe* ich] | |
| | | 2 p pl ak |
| γὰρ | ὑμᾶς | |
| denn | euch | |
| prp ak | | 3 p ak ma] |
| πρὸς | αὐτὸν] | |
| zu | ihn] | |
| | [ih*m*]. | |
| | | 2 p a2 i! md ig / ij |
| καὶ | ἰδοὺ | |
| Und | (*jetzt*) *individuell* gewahre du | |
| | (*jetzt*) *individuell* wahrnehme du | |
| | | |
| | | |
| ! | | |
| | | pn no ne |
| οὐ-δ-ὲν | | |
| Nicht-aber-eines | | |
| | | aj no ne |
| ἄξιον | | |
| *aufgrund der Unbewährtheit sich zu* führen *als angemessener Lohn erachtet* | | |
| würdig | | |
| *wert zu* würdig*en* | | |
| *angemessen* würdig | | |
| | | gn ma |
| | θανάτου | |
| *des* | Todes | |
| *der* | Todesstrafe | |
| 3 p pr | | |
| ἐστὶν | | |
| ist es | *als* | |
| pt pe no ne md/ps | | pt pe no ne md/ps (Vorgang + Zustand) |
| πεπραγμένον | | |
| sich Praktizieren*lass*enhabendes | Praktiziertworden(seiend)es | |
| sich Anwenden*lass*enhabendes | Angewendetworden(seiend)es | |
| *prp dt* | | 3 p dt ma |
| | | αὐτῷ |
| *in* | | ihm. |
| *in Verbindung mit* | | |
| *[i]mit* | | |
| *[i]mittels* | | |
| *samt* | | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**denn ich** *habe* **euch** (*de facto*)[a] **hinauf zu ih***m* **gesandt,**“

**Jedoch**
**aber**
*auch*
**Herodes**
**nicht,**
[1]**denn**
[1]**er**
[1]*hat*
[1]**ih**n
[1](*de facto*)[a]
[1]**wieder**
[1]**zu**
[1]**uns**
[1]**gesandt.**
**- Und**
**nimm**
(*jetzt*)[a]
**i***ndividuel***l**
**wahr! -**
**Nicht**
**aber**
**eines**
*aufgrund*
*der*
*Un***be***währ***t***heit*
*sich*
*zu*
**führ***en*
**ist**
*der*
**Todes***strafe*
*als*
*angemessener*
*Lohn*
*erach***t***et,*
*was*
*in**
*Verbindung**
*mit**
**ihm**
(*de facto*)[a]
(*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt]
**praktiziert**
**worden**
**ist.**

**Apg 23.29**
**Apg 28.18**

*e: nicht „von“ ihm allein, wäre prp gn, sondern prp dt: in Gemeinschaft und mit seiner Zustimmung

ohne (...) [a+pt] lesbar

| 16.) | | 16.) |
|---|---|---|
| | | pt a1 no ma kt |
| | παιδεύσας | |
| *Als* | (*de facto*) *in* **Verletz***ung* **Ge***nomm***enhabender** | |
| | (*de facto*) **Erzüchtigthabender** | |
| | (*de facto*) **Erzogenhabender** | |
| | (*de facto*) **Ausgebildethabender** | |
| | | 3 p ak ma |
| οὖν | αὐτὸν | |
| **daher** | **ihn** | |
| | | 1 p ft |
| ἀπο-λύσω | | |
| **ent-lösen werde ich** | *ihn*. | |
| **freilassen werde ich** | | |
| 17.) | | 17.) |
| ℵ, D, W, Θ, Ψ, R: | | ak fe |
| | ἀν-άγκην | |
| *Die* | **Hinauf-Pressung** | |
| | **Not***wendigkeit* | |
| | **Zwangslage** | |
| | **Zwangsläufigkeit** | |
| | | 3 p ipe |
| δὲ | εἶχεν | |
| **aber** | **hatte er** | |
| | | if pr |
| ἀπο-λύειν | | 3 p pl dt ma |
| *zu* **ent-lösen** | αὐτοῖς | |
| **frei***zu***lassen** | **ihnen** | |
| | | prp ak |
| κατὰ | | |
| **gemäß** | *dem* | |
| | | ak fe |
| ἑορτὴν | | nu ak ma |
| **Fest** | ἕνα | |
| | **einen.** | |

[1]aL: Text nicht in **Codex Alexandrinus**, **Codex Vaticanus** und **Papyrus 075**

**Daher,**
*nachdem*
*ich*
**ihn**
(*de facto*)[a]
(*im weiteren Zeitverlauf*)[pt]
*in*
**Verletz***ung*
**ge***nomm***en**
**habe,**
**werde**
**ich**
*ihn*
**freilassen.**

[1]**Er**
[1]**hatte**
[1]**aber**
[1]*die*
[1]**Not***wendigkeit*,
[1]**ihnen**
[1]**gemäß**
[1]*dem*
[1]**Fest**
[1]**einen**
[1]**frei***zu***lassen.**

Luk 23.22

*Mat 27.15*
*Mar 15.6*
*Joh 18.39*

| 18.) | | 18.) | |
|---|---|---|---|
| א, B, P 075: 3 p pl a2 ig | | [A, R: 3 p pl a1 ig] | |
| \|ἀν-έκραγον\| | | [ἀν-έκραξαν] | Sie |
| (*Jetzt*) hinauf-schrieen sie | | | |
| (*Jetzt*) a*u*f-schrieen sie | | | schrieen |
| | | א, A, R, P 075: av | |
| δὲ | | \|παν-πληθεὶ\| | aber |
| aber | | alle-voll*ständ*ig | |
| | | | (*jetzt*)[a] |
| [B: aS] | | | |
| [παμ-πληθεὶ] | | | alle |
| | | *als* | |
| | | | voll*ständ*ig |
| pt pr no ma pl | | | |
| λέγοντες | | | a*u*f, |
| Wortende | | : | |
| *die* Wort*e* *Gebrauch*ende | | | *indem* |
| Sagende | | | *sie* |
| 2 p pr i! | | pn ak ma | |
| αἶρε | | τοῦτον | (*wie folgt*)[pt] |
| *Ent*hebe du | | diesen, | |
| *Wegent*hebe du | | | sag*t*en: |
| | | 3 p a1 i! ig | |
| ἀπό-λυσον | | | „*Ent*hebe |
| (*jetzt*) ent-löse du | | | |
| (*jetzt*) freilasse du | | | diesen |
| | | 1 p pl dt | |
| δὲ | | ἡμῖν | *weg*, |
| aber | | uns | |
| | | | lasse |
| א, B, R[Ste+Scr], P 075 | | [A, R[N&A]] | |
| \|τὸν\| | | | aber |
| \|den\| | | [*den*] | |
| | | | uns |
| hebrÜ: ak ma | | (HÜ) | |
| Βαρ-αββᾶν | | (Βαρ-αβ-βᾶν) | (*jetzt*)[a] |
| Korn[2]-Verklärten[1] | | (verklärten-Vatern-*des* Plünder*guts*) | |
| verklärten-Gefütterten | | (verklärten-Vater-*des* Verachtens) | |
| Bar-Abbas | | (Bar-Ab-Bas) | den |
| (NÜ) | | | |
| (Βαρ-αββᾶν) | | | Barrabas |
| (gefütterten[2] Sohn[1]) | | !, | |
| (Sohn-*des* *Woh*l*gefütterten*) | | | frei!“, |
| (*woh*l*gefütterten*[2] Erschaffenen[1]) | | | |
| (Bar-Abbas). | | | |

Jes 49.7
Apg 3.14
Apg 13.28
Apg 21.36

| 19.) | | 19.) |
|---|---|---|
| | pn no ma | 3 p ipe |
| | ὅσ-τις | ἦν |
| | welcher-irgend | war er |
| | prp ak | ak fe |
| | διὰ | στάσιν |
| | wegen | *Auf*standes, |
| | aj ak fe | pt a2 ak fe md dp kt |
| | τινὰ | γενομένην |
| | irgend | (*de facto*) individuell Gewordenseienden |
| | irreines, | (*de facto*) individuell Geschehenseienden |
| | | (*de facto*) sich Entwickelthabenden |
| | | prp dt |
| | | ἐν |
| | *irgend* | in |
| | irreines, | |
| | | dt fe |
| | τῇ | πόλει |
| | der | Vieligen |
| | | *aus* viel*en Bestehenden* |
| | | Stadt, |
| | | *prp ak* |
| | καὶ | |
| | und | *wegen* |
| | ak ma | |
| | φόνον | |
| | Mordes | {*irgend*} |
| | | {*irreines*,} |
| | [ℵ¹, B, R, P 075: wegen dt] | [ℵ¹, A, R: |
| | [*dorthin*] | [*ein* |
| | pt pe no ma md/ps | pt pe no ma md/ps (Vorgang + Zustand)] |
| | [βεβλημένος] | |
| | sich Werfen/*ass*enhabender | Geworfenworden(seiend)er] |
| | [sich Treiben/*ass*enhabender | Getriebenworden(seiend)er] |
| | [B, P 075: | pt a2 no ma ps kt] |
| | | [βληθεὶς] |
| | [*ein* | (*de facto*) Geworfenworden(seiend)er] |
| | | [(*de facto*) Getriebenworden(seiend)er] |
| | ℵ, ℵ¹, B, R, P 075: prp dt | |
| | \|ἐν | τῇ |
| | \|in | dem |
| | dt fe | [A: |
| | φυλακῇ\| | [εἰς |
| | Gewahrsam*sort*\| | [hinein in |
| | \|Verwahrung*sort*\| | [hin] |
| | \|Obhut*sort*\| | |
| | | ak fe] |
| | | φυλακήν] |
| | *den* | Gewahrsam*sort*] |
| | | [Verwahrung*sort*]. |
| | | [Obhut*sort*] |

[1]aL, Codex Alexandrinus schreibt (`ak statt dt, daher ohne „dorthin“`):
„**und** *wegen* {*irreines*} **Mordes war** *er einer*,
*der* (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] [h]**in** *den* **Verwahrung***sort* **geworfen worden war**.“
[1]aL, Codex Vaticanus und Papyrus 075 schreiben (`a statt pe md/ps`):
„**und** *wegen* {*irreines*} **Mordes in dem Verwahrung***sort* *als einer* **war**,
*der* (*de facto*)[a] (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] *dorthin* **geworfen worden war**.“
[1]aL, Textus Receptus schreibt (`pe md/ps statt a`):
„**und** *wegen* {*irreines*} **Mordes in dem Verwahrung***sort* *als einer* **war**,
*der* (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] *dorthin* **geworfen worden war**.“

**welcher**
**irgend**
**wegen**
[ir]**eines**
*Auf***standes,**
[ir]*eines*
(*de facto*)[a]
**individuell**
**in**
**der**
**Stadt**
**geschehenseienden**
[1]**und**
[1]*wegen*
[1]{[ir]*eines*}
[1]**Mordes**
[1]**in**
[1]**dem**
[1]**Verwahrung***sort*
[1]**war.**

[1]aL,
1. Korrektor Codex Sinaiticus
schreibt:
„**und**
*wegen*
{[ir]*eines*}
**Mordes**
**in**
**dem**
**Verwahrung***sort*
*als*
*einer*
**war,**
*der*
(*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt]
*dorthin*
**geworfen**
**worden**
**war.**“

| 20.) | | 20.) | |
|---|---|---|---|
| | av | | |
| πάλιν | | δὲ | [1]Nochmals |
| Nochmals | | aber | [1]aber |
| Dann wieder | | | [1]*erhob* |
| | | ltÜ: no ma | |
| ὁ | | Πιλᾶτος | [1](*jetzt*)[a] |
| der | | Wurfspieß*habend*e | [1]der |
| | | *mit* Wurfspieß*en Bewaffnet*e | [1]Pilatus |
| | | Pilatus | [1]*die* |
| | 3 p a1 ig | ϰ, B, P 075: 3 p pl dt ma | [1]Stimme |
| προσ-εφώνησεν | | \|αὐτοῖς\| | [1]zu |
| (*jetzt*) zu-*die* Stimme *erhob* er | | \|ihnen\| | [1]ihnen, |
| (*jetzt*) zu-*Ruf er*tönen *ließ* er | | | *als* |
| | [A, R] | | *den* |
| [*ihnen*], | | *als* | Will*en* |
| | pt pr no ma | if a1 kt | *Hab*ender, |
| θέλων | | ἀπο-λῦσαι | den |
| *den* Will*en Hab*ender, | | (*de facto*) *zu* ent-lösen | Jesus |
| | | (*de facto*) freizulassen | (*de facto*)[a] |
| | | hebrÜ: ak ma | freizulassen. |
| τὸν | | Ἰη-σοῦν | |
| den | | Er *mach*t Werden-*bedeutet* Rettung<br>Er wird *fortdauernd-bedeutet* Rettung<br>werden*mach*enden-Rettrufer<br>Werden*mach*enden,-*der* Rettung *ist*,<br><JHWH>,-*der* Rettung *ist*,<br><JHWHs>-Rettrufer<br>Je-sus.<br>Jöho-schua | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**Nochmals aber** *erhob* (*jetzt*)[a] **der Pilatus** *die* **Stimme zu** *ihnen*,“

Ps 2.6
Jer 23.5

| 21.) | | 21.) | |
|---|---|---|---|
| | no ma pl | | Die |
| οἱ | | δὲ | *Angesprochenen* |
| Die | *Angesprochenen* | aber | aber |
| | | 3 p pl ipe | *erhob*en |
| | ἐπ-εφώνουν | | *dar*auf*hin* |
| | *all*gebiets o. *dar*auf*hin -die* Stimme *erhob*en sie | | *die* |
| | *all*gebiets o. *dar*auf*hin-Ruf* ertönen *ließen* er sie | | Stimme, |
| | pt pr no ma pl | | *indem* |
| | λέγοντες | | *sie* |
| *als* | Wortende | : | (*wie folgt*)[pt] |
| | *die* Wort*e Gebrauch*ende | | sag*t*en: |
| | Sagende | | *Lass*e |
| | | ϰ, B, D, P 075: 2 p pr i! | [(*de facto*)[a]] |
| | \|σταύρου | | *an* |
| | \|*an einen* Stehen*den bring*en *lass*e du | | *den* |
| | \|*an*pfahlen *lass*e du | | Pfahl |
| | \|*an den* Pfahl *bring*en *lass*e du, | | *bring*en, |
| | \|{*inform eines „T“*} kreuzigen *lass*e du | | *lass*e |
| | | 2 p pr i! | ihn |
| | σταύρου\| | | [(*de facto*)[a]] |
| | *an einen* Stehen*den bring*en *lass*e du\| | | *an* |
| | *an*pfahlen *lass*e du\| | | *den* |
| | *an den* Pfahl *bring*en *lass*e du\| | | Pfahl |
| | {*inform eines „T“*} kreuzigen *lass*e du\| | | *bring*en! |
| | | [A, W, R: 2 p a1 i! kt | |
| | [σταύρωσον | | |
| | [(*de facto*) *an einen* Stehen*den bring*en *lass*e du | | |
| | [(*de facto*) *an*pfahlen *lass*e du | | |
| | [(*de facto*) *an den* Pfahl *bring*en *lass*e du, | | |
| | [(*de facto*) {*inform eines „T“*} kreuzigen *lass*e du | | |
| | | 2 p a1 i! kt] | |
| | σταύρωσον] | | |
| | (*de facto*) *an einen* Stehen*den bring*en *lass*e du] | | |
| | (*de facto*) *an*pfahlen *lass*e du] | | |
| | (*de facto*) *an den* Pfahl *bring*en *lass*e du] | | |
| | (*de facto*) {*inform eines „T“*} kreuzigen *lass*e du] | | |
| | 3 p ak ma | | |
| αὐτόν | | | |
| ihn | | ! | |

Mar 15.14
Joh 19.15

ohne (...) [a+pt] lesbar

| 22.) | | | 22.) |
|---|---|---|---|
| | no ma | | |
| | ὁ | | |
| | Der | *Angesprochene* | |
| | | | |
| | δὲ | | |
| | aber | *ein* | |
| | | | |
| | aj ak ne | | |
| | τρίτον | | |
| | drittes | *Mal* | |
| | | | |
| | 3 p a2 ig | | prp ak |
| | εἶπεν | πρὸς | |
| | (*jetzt*) sagte er | zu | |
| | | | |
| | 3 p pl ak ma | | |
| | αὐτούς | | |
| | sie | *:* | |
| | i*hnen* | | |
| | | | |
| | pn ak ne | | |
| | τί | γὰρ | |
| | Was | denn | |
| | | | |
| | aj ak ne | | 3 p a1 kt |
| | κακὸν | ἐποίησεν | |
| | übles | (*de facto*) getan *hat* er<br>(*de facto*) gemacht *hat* er | |
| | | | |
| | pn no ma | | |
| | οὗτος | | |
| | dieser | ? | |
| | | | |
| | pn ak ne | | aj ak ne |
| | οὐ-δ-ὲν | αἴτιον | |
| | Nicht-aber-ein | Ursächliches<br>*Schuld*ursächliches<br>beschuldigung*swürdiges Verhalten* | |
| | | | |
| | | | gn ma |
| | | θανάτου | |
| | *des* | Todes | |
| | *der* | Todes*strafe* | |
| | | | |
| | 1 p a1 kt | | prp dt |
| | εὗρον | ἐν | |
| | (*de facto*) gefunden *habe* ich | in | |
| | | | |
| | 3 p dt ma | | |
| | αὐτῷ | | |
| | ihm | ! | |
| | | | |
| | | | pt a1 no ma kt |
| | | παιδεύσας | |
| | *Als* | (*de facto*) *in* Verletz*ung* Ge*nomm*enhabender<br>(*de facto*) Erzüchtigthabender<br>(*de facto*) Erzogenhabender<br>(*de facto*) Ausgebildethabender | |
| | | | |
| | | | 3 p ak ma |
| | οὖν | αὐτὸν | |
| | daher | ihn, | |
| | | | |
| | 1 p ft | | |
| | ἀπο-λύσω | | |
| | ent-lösen werde ich<br>freilassen werde ich | *ihn*. | |

| | |
|---|---|
| Der | |
| *Angesprochene* | |
| aber | |
| sagte | |
| (*jetzt*)[a] | |
| *ein* | |
| drittes | |
| *Mal* | |
| zu | |
| i*hnen:* | |
| Was | |
| *hat* | |
| dieser | |
| denn | |
| (*de facto*)[a] | |
| übles | Joh 8.46 |
| getan? | |
| Ich | |
| *habe* | |
| (*de facto*)[a] | |
| aber | |
| nicht | |
| ein | |
| *Schuld*ursächliches | Luk 23.4+16 |
| *der* | Apg 23.29<br>Apg 28.18 |
| Todes*strafe* | |
| in | |
| ihm | |
| gefunden! | |
| Daher, | |
| *nachdem* | |
| *ich* | |
| ihn | |
| (*de facto*)[a] | |
| (*im weiteren Zeitverlauf*)[pt] | |
| *in* | |
| Verletz*ung* | Luk 22.16 |
| ge*nomm*en | |
| habe, | |
| werde | |
| ich | |
| *ihn* | |
| freilassen. | |

23.) 23.)

no ma pl
οἱ δὲ
Die Angesprochenen aber

✖: 3 p pl ipe md/ps dp | 3 p ipe pl md/ps dp (Vorgang)
|ἔκειντο|
|individuell legten sie | zum Legen veranlaßt wurden sie|

[A, B, R: 3 p pl ipe md/ps dp | 3 p pl ipe md/ps dp (Vorgang)]
[ἐπ-έκειντο]
[individuell darauf-legten sie | zum Darauf-Legen veranlaßt wurden sie]

✖
|darauf| Wert als

prp dt | dt fe pl
φωναῖς
infolge von den Stimmen, den
[i]mit Geräuschen

aj dt fe pl | pt pr no ma pl md/ps
μεγάλαις αἰτούμενοι
großen, individuell ursächlich Ersuchende
individuell Bittende
individuell Fordernde

pt pr no ma pl md/ps (Zustand) | pt pr no ma pl md/ps (Vorgang)
zum ursächlich Ersuchen Veranlaßtseiende | zum ursächlich Ersuchen Veranlaßtseiende
zum Bitten Veranlaßtseiende | zum Bitten Veranlaßtwerdende
zum Fordern Veranlaßtseiende | zum Fordern Veranlaßtwerdende,

daß bestimmt werden sollte es

✖, A, R: prp ak | 3 p ak ma
αὐτὸν
hinein in ihn,
[h]für

✖, A, R: if a1 ps kt
|σταυρωθῆναι|
|(de facto) an einen Stehenden gebracht zu werden|
|(de facto) angepfahlt zu werden|
|(de facto) an den Pfahl gebracht zu werden|
|(de facto) {inform eines „T“} gekreuzigt zu werden|

[B: if a1 kt]
[σταυρῶσαι]
[(de facto) an einen Stehenden zu bringen]
[(de facto) anzupfahlen]
[(de facto) an den Pfahl zu bringen]
[(de facto) zu kreuzigen {inform eines „T“}]

3 p pl ipe
καὶ κατ-ίσχυον
und allbezüglich-erstarkten sie
von oben herab-erstarkten sie

no ma pl | 3 p pl gn ma | [A, R:
αἱ φωναὶ αὐτῶν [καὶ
die Stimmen, ihrerseits [und
ihre,

gn ma pl]
τῶν ἀρχ-ιερέων]
die der Anfangs-Geweihten]
[Ranganfangs-Priester]
[Hohenpriester].

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**Die** *Angesprochenen* **aber legten** *individuell darauf Wert*,
*als* [i]*mit* **großen Stimmen** *individuell* **Fordernde**,
*daß es* [h]*für* **ihn** *bestimmt werden sollte*,
**(***de facto***)**[a] *an den* **Pfahl** *gebracht zu* **werden**,
**und** *es* **erstarkten ihre** [d] **Stimmen und** *die* **der Hohenpriester** *all***bezüglich.**“
[2]aL, **Codex Vaticanus** schreibt („*daß es* [h]*für* **ihn** *bestimmt werden sollte*,“ `fehlt, ac statt ps`):
„**Die** *Angesprochenen* **aber legten** *individuell darauf Wert*,
*als* [i]*mit* **großen Stimmen** *individuell* **Fordernde**,
**(***de facto***)**[a] *an den* **Pfahl** *zu bringen*,
**und** *es* **erstarkten ihre** [d] **Stimmen** *all***bezüglich.**“

[1]Die
[1]Angesprochenen
[1]aber
[1]legten
[1]individuell
[1]darauf
[1]Wert,
[1]als
[1][i]mit
[1]großen
[1]Stimmen
[1]individuell
[1]Fordernde, 2 Mos 23.2
[1]daß
[1]es
[1][h]für
[1]ihn
[1]bestimmt
[1]werden
[1]sollte,
[1](de facto)[a]
[1]an
[1]den
[1]Pfahl
[1]gebracht
[1]zu
[1]werden,
[1]und
[1]es
[1]erstarkten
[1]ihre [d] Stimmen
[1]allbezüglich.

ohne (...) a+pt lesbar

| 24.) | | 24.) | |
|---|---|---|---|
| | ℵ, B | [A, R: no ma | |
| \|καὶ\| | | [ὁ | [1]Und |
| \|Und\| | | [der | [1]Pilatus |
| | cj] | ltÜ: no ma | |
| δὲ] | | Πιλᾶτος | [1]entschied |
| aber] | | Wurfspieß*habend*e | [1](*jetzt*)[a] |
| | | *mit* Wurfspieß*en Bewaffnet*e | [1]*dar*auf*hin* |
| | | Pilatus | [1]*durch* |
| | | 3 p a1 ig | [1]Richter*spruch*, |
| ἐπ-έκρινε | | | ihre [d] Bitte |
| (*jetzt*) *all*gebiets o. *dar*auf*hin-dar*auf*hin*-urteilte er | | | (*de facto*)[a] |
| (*jetzt*) *all*gebiets o. *dar*auf*hin-durch* Richter*spruch entschied* er | | | *individuel*l |
| | | if a2 md dp kt | geschehen |
| γενέσθαι | | | *zu* |
| (*de facto*) *individuel*l werden *zu lass*en | | | *lass*en. |
| (*de facto*) *individuel*l geschehen *zu lass*en | | | |
| (*de facto*) sich entwickeln *zu lass*en | | | |
| | ak ne | 3 p pl gn ma | |
| τὸ | αἴτημα | αὐτῶν | Er |
| das | ursäch*liche Ersuch*en | ihrer*seits* | aber |
| die | Bitte, | ihre. | ließ |
| das | *Er*betene | | (*de facto*)[a] |

[1]aL, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben:
„Aber der Pilatus *entschied* (*jetzt*)[a] *dar*auf*hin durch* Richter*spruch*,“

| 25.) | | 25.) | |
|---|---|---|---|
| 3 p a1 kt | | no ma | |
| ἀπ-έλυσεν | δὲ | τὸν | *den*jenigen |
| (*De facto*) ent-löste er | aber | den | frei, |
| (*De facto*) freiließ er | | | *der* |
| prp ak | | ak fe | wegen |
| διὰ | | στάσιν | *Auf*stands |
| wegen | des | *Auf*stands | und |
| | prp ak | ak fe | *wegen* |
| καὶ | | φόνον | Mordes |
| und | *wegen* | Mordes | (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] |
| pt pe ak ma md/ps | | pt pe ak ma md/ps (Vorgang + Zustand) | [h]in |
| βεβλημένον | | | [den] |
| sich Werfen/*lass*enhabenden | | Geworfenworden(seiend)en | Verwahrung*sort* |
| sich Treiben/*lass*enhabenden | | Getriebenworden(seiend)en | geworfen |
| prp ak | ℵ, B | [A, R] | worden |
| εἰς | | [τὴν] | war, |
| hinein in | \|*den*\| | [den] | welchen |
| [h]in | | | sie |
| ak fe | | pn ak ma | *individuel*l |
| φυλακὴν | | ὃν | forderten, |
| Gewahrsam*sort* | | welchen | den |
| Verwahrung*sort*, | | | Jesus |
| Obhut*sort* | | | aber |
| | | 3 p pl ipe md/ps | überlieferte |
| ᾐτοῦντο | | | er |
| *individuel*l ursäch*lich ersuch*ten sie | | | (*jetzt*)[a] |
| *individuel*l erbaten sie | | | {*infolge* |
| *individuel*l forderten sie | | | *von*} |
| | | 3 p pl ipe md/ps (Vorgang) | ihrem [d] Willen. |
| *zum* ursäch*lich Ersuch*en *veranlaß*t wurden sie | | | |
| *zum* Erbitten *veranlaß*t wurden sie | | | |
| *zum* Fordern *veranlaß*t wurden sie | | | |
| τὸν | δὲ | | |
| den | aber | | |
| hebrÜ: ak ma | | 3 p a1 kt | |
| Ἰη-σοῦν | | παρ-έδωκεν | |
| Er *mach*t Werden-*bedeutet* Rettung | | (*jetzt*) daneben-gab er | |
| Er wird *fortdauernd-bedeutet* Rettung | | (*jetzt*) unmittelbar-*über*gab er | |
| werden*mach*enden-Rettrufer | | (*jetzt*) unmittelbar-*dahin*gab er | |
| Werden*mach*enden,-*der* Rettung *ist*, | | (*jetzt*) überlieferte er | |
| <JHWH>,-*der* Rettung *ist*, | | | |
| <JHWHs>-Rettrufer | | | |
| Je-sus | | | |
| Jöho-schua | | | |
| *prp dt* | | dt ne | 3 p pl gn ma |
| τῷ | | θελήματι | αὐτῶν |
| {*infolge von*} | dem | Willen, | ihrer*seits* |
| {*aufgrund von*} | | | ihrem. |

Spr 17.15

Apg 7.52

Apg 3.13
Apg 13.28

| | | |
|---|---|---|
| Weg | | |
| (nach | Weg | |
| Golgatha) | (nach | |
| - | | |
| Träger *eines* Stehen*den* | Golgatha)* | *e: Wort wird bei Lukas nicht verwendet |
| Pfahlträger | | |
| Pfahlbringer | - | |
| Kreuzträger | | |
| - | Pfahlträger | |
| *Sich-an-die-Brust*-Hauen | | |
| Wehklage | - | |
| - | | |
| *Bring*ung *an einen* Stehen*den* | Wehklage | |
| Anpfahlung | | |
| *Bring*ung *an den* Pfahl | - | |
| Kreuzigung {*inform eines „T“*} | | |
| - | | |
| Die | Die | |
| Das | | |
| | *Mit*angepfahlten | |
| Verteilung | | |
| Schicksal | - | |
| der | Anpfahlung | |
| | | |
| *Be*riemten | - | |
| *mit* Riemen Z*usammengeha*lten*en* | | |
| Gewänder | Die | |
| - | | |
| Aus*drückliche zum* Brüllen Hütung | Verteilung | |
| Aus*drücklich* Nasenrümpfung | | |
| Verspottung | der | Mat 27.32-43 |
| des | | Mar 15.21-32 |
| | Gewänder | Joh 19.17-24 |
| *Gleich*sprachigen | | |
| Volkes | - | |
| - | | |
| Übersetzung siehe Text | Jesu | |
| Jesu | | |
| Wort | Wort | |
| Erwogenes | | |
| Erwähltes | am | |
| Rechnung*slegen* | | |
| Log*ik* | Pfahl | |
| am | - | |
| | | |
| Stehenden | Verspottung | |
| Pfahl | | |
| Kreuz {*inform eines „T“*} | des | |
| - | | |
| In*nen*verletzung | Volkes | |
| In*nen*spiel*treib*en | | |
| *Ver*höhnung | - | |
| durch | | |
| | *Ver*höhnung | |
| Heer*kämpf*er | | |
| Krieger | durch | |
| - | | |
| *Sauer*scharfer | Krieger | |
| Essig | | |
| Essig*was*ser | - | |
| *Weine*ssig | | |
| - | Essig | Mat 27.48 |
| Schrift*zeich*en | | Mar 15.36 |
| Buchstaben | | Joh 19.29 |
| - | - | |
| *mit an einen* Stehen*den* Ge*brach*ten | | |
| *Mit*angepfahlten | Schrift*zeich*en | |
| *mit an den* Pfahl Ge*brach*ten | | |
| {*inform eines „T“*} *Mit*gekreuzigten | | |

26.) 26.)

καὶ ὡς
Und als

ℵ, ℵ¹, ℵ², A, C, R: 3 p pl a2 kt
|ἀπ-ήγαγον|
(*de facto*) **weg-führten sie**
(*de facto*) **ab-führten sie**

[B: aS]
[ἀπ-ήγον]

3 p ak ma
αὐτόν
**ihn,** *als*

pt a2 no ma pl md kt
ἐπι-λαβόμενοι
(*de facto*) **individuell allgebiets o. daraufhin-Genommenhabende**
(*de facto*) **individuell allgebiets o. daraufhin-Ergriffenhabende**

[C: pn ak ma]
[τινα]
[**irgend** *gewissen*]
[[ir]**einen**]

ℵ, ℵ¹, ℵ², B ℵ, ℵ¹, ℵ², B, C: hebrÜ: ak ma
|Σίμωνα
|*die*| **Erhörung**
|*den*| **Simon,**

ℵ, ℵ¹, ℵ², B: pn ak ma [C]
|τινα|
|**irgend**| [*den*]
|[ir]**einen**|

ℵ, ℵ¹, ℵ², B, C: gr / hebrÜ: ak ma
Κυρηνέον
*Zugehörigen zu der Geltunghabenden*
*Zugehörigen zu der* **Gebälkten|**
|*Zugehörigen zu der* **Burg** *Habenden*|
|*Zugehörigen zu der* **Herrscherin|**
|**Kyrene** *Zugehörigen*|
|**Kyrenier,**|

pt pr ak ma md/ps dp
ἐρχόμενον|
*einen* **individuell kommenden**

pt pr ak ma md/ps dp (Zustand) pt pr ak ma md/ps dp (Vorgang)

*zum* **Kommen** *veranlaß***tseienden** *zum* **Kommen** *veranlaß***twerdenden|**

[A, R:

[*den* *Rücken*

hebrÜ: gn ma pn gn ma
[Σίμωνος τινος
*der* **Erhörung** **irgend**
[*des* **Simon,** [ir]**eines**

gn ma
Κυρηναίου
[*Zugehörigen zu der* **Geltunghabenden**
[*Zugehörigen zu der* **Gebälkten]**
[*Zugehörigen zu der* **Burg** *Habenden]*
[*Zugehörigen zu der* **Herrscherin]**
[**Kyrene** *Zugehörigen]*
[**Kyreniers,]**

pt pr gn ma md/ps dp
τοῦ ἐρχόμενου
**des** **individuell kommenden**

pt pr gn ma md/ps dp (Zustand) pt pr gn ma md/ps dp (Vorgang)]

*zum* **Kommen** *veranlaß***tseienden** *zum* **Kommen** *veranlaß***twerdenden]**

prp gn gn ne
ἀπ' ἀγροῦ
**von** *dem* *Umherführland*
**Feld,**
**wilden** *Ort*
**Ackerland**

[1]aL, **Codex Ephraemi** schreibt:
„*nachdem sie* (*de facto*)[a] (*im weiteren Zeitverlauf*)[pt] **individuell** *dar***auf***hin* [ir]**einen** *gewissen* **Simon,**
*den* **Kyrenier,** *einen* **individuell vom Feld kommenden, ergriffen ha*tt*en,**“

**Und**
**als**
**sie**
**ihn**
(*de facto*)[a]
**wegführten,**
[1]*nachdem*
[1]*sie*
[1](*de facto*)[a]
[1](*im weiteren Zeitverlauf*)[pt]
[1]**individuell**
[1]*dar***auf***hin*
[1]**Simon,**
[1][ir]**einen**
[1]**Kyrenier,**
[1]*einen*
[1]**individuell**
[1]**vom**
[1]**Feld**
[1]**kommenden,**
[1]**ergriffen**
[1]**ha*tt*en,**

[1]aL,
**Codex Alexandrinus**
und
**Textus Receptus**
schreiben:
„*nachdem*
*sie*
(*de facto*)[a]
(*im weiteren Zeitverlauf*)[pt]
**individuell**
*dar***auf***hin*
*den*
*Rücken*
*des*
**Simon,**
[ir]**eines**
**Kyreniers,**
*eines*
**individuell**
**vom**
**Feld**
**kommenden,**
**ergriffen**
**ha*tt*en,**“

Röm 16.13
genau Mar 15.21

*Röm 11.10*

| | | |
|---|---|---|
| ℵ, ℵ1*: | 3 p a1 ig | |
| | \|ἐπ-έθηκεν\| | [1]setzte |
| \|einer | (jetzt) auf-setzte er\| | [1](jetzt)[a] |
| | | [1]einer* |
| [ℵ2, A, B, C, R: 3 p pl a1 ig] | 3 p dt ma | [1]ihm |
| [ἐπ-έθηκαν] | αὐτῷ | [1]das |
| [(jetzt) auf-setzten sie] | ihm | *[1]zum Pfahl Gehörige |
| | | [1]auf, |
| | ak ma | [1]hinter |
| τὸν | σταυρὸν | [1]dem |
| den | {zum} Stehenden {Gehörigen} | [1]Jesus |
| [den | Pfahl] | [1]her. |
| das | zum Pfahl Gehörige, | |
| [das | {zum} Kreuz {inform eines „T“} {Gehörige}] | |
| [ℵ1, ℵ2, A, B, C, R] | versteckter a. c. i. | |
| [weil | bestimmt war es | |
| prp ak | 3 p ak ma] | |
| hinein in | ihn] | [1]aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus, Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben: „setzten sie (jetzt)[a] ihm das *zum Pfahl Gehörige auf, weil es [h]für ihn bestimmt war, hinter dem Jesus her zu tragen.“ |
| [[h]für] | | |
| [ℵ1: | if pr] | |
| | [αἴρειν] | |
| [ihn | [auf sich heben zu lassen] | |
| [ℵ2, A, B, C, R: if pr] | prp gn | |
| [φέρειν] | ὄπισ-θεν | |
| [zu bringen] | hinterher-gesetzt | |
| [zu tragen] | hinter her | |
| | hebrÜ. gn ma | |
| τοῦ | Ἰη-σοῦ | |
| dem | Er macht Werden-bedeutet Rettung | |
| | Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung | |
| | werdenmachenden-Rettrufer | |
| | Werdenmachenden,-der Rettung ist, | |
| | <JHWH>,-der Rettung ist, | |
| | <JHWHs>-Rettrufer | |
| | Je-sus. | |
| | Jöho-schua | |

*e vom 1. Korrektor nicht korrigiert

*e: Platz für das Geschriebene der Schuldursache Mat 27.37 Mar 15.26 Luk 23.38 Joh 19.19-22 in römisch griechisch hebräisch

[1]aL, 1. Korrektor Codex Sinaiticus schreibt:
„setzte (jetzt)[a] einer ihm das zum Pfahl Gehörige auf, weil es [h]für ihn bestimmt war, ihn auf sich heben zu lassen, hinter dem Jesus her.“

| 27.) | | 27.) |
|---|---|---|
| | 3 p ipe | [1]Es |
| ἡ-κολού-θει | | [1]folgte |
| *Sich* **gleich***verhalt***end-anleimen***d***-setzte sie** | | [1]ihm |
| *Sich* **gleich***verhalt***end-anhaften***d***-setzte sie** | | [1]aber |
| **Folgte sie** | | [1]eine |
| **Begleitete sie** | | [1]viel*zähl*ige |
| **Anhing sie** | | [1]Fülle |
| | | [1]des |
| δὲ | | [1]Volkes |
| **aber** | | [1]und |
| | 3 p dt ma | [1]der |
| αὐτῷ | | [1]Weiber. |
| **ihm** | | [1]Sie |
| **ihm** | | [1]wehklagten |
| **ihm** | | [1]*individuell* |
| **ih***n* | | [1]und |
| **ihm** | | [1]klagten |
| | | [1]auf |
| | | [1]ihn |
| *eine* | | [1]zu. |
| | aj gn ne | |
| πολὺ | | |
| **viel***zähl***ige** | | |
| | no ne | |
| πλῆθος | | |
| **Fülle** | | |
| τοῦ | | |
| **des** | | |
| | gn ma | |
| λαοῦ | | |
| *Gleich***sprachigen** | | |
| **Volkes** | | |
| καὶ | | |
| **und** | | |
| *der* | | |
| | gn fe pl | |
| γυναικῶν | | |
| **Weiber,** | | |
| **Frauen** | | |
| | [A, B, C, R: pn no fe pl] | |
| [αἳ] | | |
| [welche] | | |
| | 3 p pl ipe md/ps | |
| ἐκόπτοντο | | |
| **sich** *an die Brust* **hauten sie** | | |
| **i***ndividuel***l wehklagten sie** | | |
| | 3 p pl ipe md/ps (Vorgang) | |
| *zum sich an die Brust* **hauen** *veranlaß***t wurden sie** | | |
| *zum* **Wehklagen** *veranlaß***t wurden sie** | | |
| καὶ | | |
| **und** | | |
| | 3 p pl ipe | |
| ἐθρήνουν | | |
| **klagten sie** | | |
| **Klag***elieder sang***en sie** | | |
| **jammerten sie** | | |
| **lamentierten sie** | | |
| | *prp ak* | |
| *auf zu* | | |
| | 3 p ak ma | |
| αὐτόν | | |
| **ihn.** | | |

[1]aL,
**Codex Alexandrinus**,
**Codex Vaticanus**,
**Codex Ephraemi**
und
**Textus Receptus**
schreiben:
„*Es*
**folgte**
**ihm**
**aber**
*eine*
**viel***zähl***ige**
**Fülle**
**des**
**Volkes**
**und**
*der*
**Weiber,**
**welche**
**i***ndividuel***l**
**wehklagten**
**und**
*auf*
**ihn**
*zu*
**klagten.**“

Sach 12.10

28.) 28.)

*Als* | *{dadurch}*

pt a2 no ma pl ps ig (Vorgang + Zustand)
στραφεὶς
**(*jetzt*) *zum* Wenden *Veranlaß*tworden(seiend)er**
**(*jetzt*) *zum* Kehr*tmach*en *Veranlaß*tworden(seiend)er**

ℵ, ℵ², A, B, R: prp ak
δὲ | πρὸς
**aber** | **zu**

C = 3

3 p pl ak fe | ℵ², B | [ℵ², A, C, R]
αὐτὰς | | [ὁ]
**sie** | **|*der*|** | **[der]**
**i*hnen***
C = 4 | C = 1

hebrÜ: no ma | 3 p a2 kp
Ἰη-σοῦς | εἶπεν
**Er *mach*t Werden-*bedeutet* Rettung**
**Er wird *fortdauernd-bedeutet* Rettung**
**werden*mach*ende-Rettrufer**
**Werden*mach*ende,-*der* Rettung *ist*,**
**<JHWH>,-*der* Rettung *ist*,**
**<JHWHs>-Rettrufer**
**Je-sus**
**Jöho-schua**
C = 2 | **(*alles überschauend*) sagte er**

*:*

vo | vo fe pl
θυγατέρες
*O* | **Töchter**

hebrÜ: gn fe
Ἱερου-σαλήμ
*des* | **zielseienden-Friedens**
*des* | **überfließenden-Friedens**
*des* | **durchtränkenden-Friedens**
*des* | **errechteten-Friedens**
*der* | **Jeru-Salem**

**!**

2 p pl pr i! | prp ak | 1 p ak
μὴ | κλαίετε | ἐπ’ | ἐμέ
**Nich*t*** | **schluchzet ihr** | **auf *zu*** | **mich**

**!**

prp ak | 3 p pl ak fe
πλὴν | ἐφ’ | ἑ-αυτὰς
**Vielig** | **auf *zu*** | **euch-selbst**
**Mehrig**
**Indes,**

2 p pl pr i! | prp ak
κλαίετε | καὶ | ἐπὶ
**schluchzet ihr** | **und** | **auf *zu***

ak ne pl | 2 p pl gn
τὰ | τέκνα | ὑμῶν
**die** | **Kinder,** | **eurer*seits***
**eure**

**!**

[1]aL, Codex Ephraemi schreibt:
„*Als* **aber der Jesus (*jetzt*)[a] {*dadurch*} (*allmählich*)[pt]** *zum* **Wenden** *veranlaß*t **worden war, sagte er zu i*hnen** (*alles überschauend*)[pt]:“

[1]*Als*
[1]*er*
[1]**aber**
[1]**(*jetzt*)[a]**
[1]**{*dadurch*}**
[1]**(*allmählich*)[pt]**
[1]*zum*
[1]**Wenden**
[1]*veranlaß*t
[1]**worden**
[1]**war,**
[1]**sagte**
[1]**zu**
[1]**i*hnen***
[1]**Jesus**
[1]**(*alles überschauend*)[pt]**:
*O*
**Töchter**
**Jerusalems!**
**Schluchzet**
**nich*t***
**auf**
**mich**
*zu*!
**Indes,**
**schluchzet**
**auf**
**euch**
**selbst**
*zu*
**und**
**auf**
**eure [d] Kinder**
*zu*!

Jer 9.19

5 Mos 28.57
Jer 9.20
Luk 19.44

[1]aL,
2. Korrektor Codex Sinaiticus,
Codex Alexandrinus
und
Textus Receptus
schreiben:
„*Als*
*er*
**aber**
**(*jetzt*)[a]**
**{*dadurch*}**
**(*allmählich*)[pt]**
*zum*
**Wenden**
*veranlaß*t
**worden**
**war,**
**sagte**
**zu**
**i*hnen***
**der**
**Jesus**
**(*alles überschauend*)[pt]**:“

29.) 29.)

cj — nicht P 075: 2 p a2 i! md ig / ij

| | |
|---|---|
| ὅτι | ἰδοὺ |
| Da, | (*jetzt*) *individuel*l gewahre du |
| | (*jetzt*) *individuel*l wahrnehme du |
| | |
| | |
| ! | |

א, C, C²: no fe pl — 3 p pl pr md/ps dp

| | |
|---|---|
| ἡμέραι | ἔρχονται |
| Tage | *individuel*l kommen sie |
| A, B, R, P 075 = 2 | A, B, R, P 075 = 1 |

3 p pl pr md/ps dp (Zustand) — 3 p pl pr md/ps dp (Vorgang)

| | |
|---|---|
| *zum* Kommen *veranlaß*t sind sie | *zum* Kommen *veranlaß*t werden sie, |

prp dt — dt fe pl

| | |
|---|---|
| ἐν | αἷς |
| in | welchen |

3 p pl ft

ἐροῦσιν

{*Gedanke*} fließen *lass*en werden sie
reden werden sie

:

aj no ma pl — [A, B, C, C², R, P 075]

| | | |
|---|---|---|
| μακάριαι | | [αἱ] |
| Selige | *sind sie* | [die] |
| Glückselige | | |
| Glückliche | | |

א: no fe pl — [A, B, C, C², R, P 075: no fe pl]

| | |
|---|---|
| \|στεῖραι\| | [στεῖραι] |
| \|*durch Entzug*, *Leben zu geben*, *Ent*festigte\| | [*durch Entzug*, *Leben zu geben*, *Ent*festigten] |
| \|*der Möglichkeit*, *Leben zu geben*, Beraubte\| | [*der Möglichkeit*, *Leben zu geben*, Beraubten] |
| \|*der Lebensgebung* Entzogene\| | [*der Lebensgebung* Entzogenen] |
| \|Sterile\| | [Sterilen] |

no fe pl — pn no fe pl

| | | | |
|---|---|---|---|
| καὶ | αἱ | κοιλίαι | αἳ |
| und | die | Gewölbten Höhlungen | welche |
| | | *Leibes*höhlen, | |

3 p pl a1 kt

| | |
|---|---|
| οὐκ | ἐγέννησαν |
| nicht | (*de facto*) erwerden *lass*en *haben* sie |
| | (*de facto*) *ge*bären *lass*en *haben* sie |
| | (*de facto*) zeugen *lass*en *haben* sie |
| | (*de facto*) erzeugen *lass*en *haben* sie |

no ma pl — pn no ma pl

| | | | |
|---|---|---|---|
| καὶ | | μαστοὶ | οἳ |
| und | *die* | Brustwarzen, | welche |

א, B, C, P 075: 3 p a1 kt

| | |
|---|---|
| οὐκ | \|ἔθρεψαν\| |
| nicht | \|(*de facto*) genährt *haben* sie\| |
| | \|(*de facto*) ernährt *haben* sie\| |

[A, R: 3 p pl a1 kt] — [C²: 3 p pl a1 kt]

| | |
|---|---|
| [ἔθήλασαν] | [ἐξ-εθρεψαν] |
| [(*de facto*) gesäugt *haben* sie] | [(*de facto*) aus*reichend*-genährt *haben* sie]. |
| | [(*de facto*) aus*reichend*-ernährt *haben* sie] |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„Da, nimm (*jetzt*)[a] *individuel*l wahr! *Es* kommen *individuel*l Tage, in welchen sie reden werden:
Selige *sind* die Sterilen und die *Leibes*höhlen,
welche (*de facto*)[a] nicht *ge*bären *lass*en *haben* und *die* Brustwarzen,
welche (*de facto*)[a] nicht gesäugt *haben*."

[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„Da, nimm (*jetzt*)[a] *individuel*l wahr! *Es* kommen *individuel*l Tage, in welchen sie reden werden:
Selige *sind* die Sterilen und die *Leibes*höhlen,
welche (*de facto*)[a] nicht *ge*bären *lass*en *haben* und *die* Brustwarzen,
welche (*de facto*)[a] nicht genährt *haben*."

[1]aL, **Codex Ephraemi** schreibt:
„Da, nimm (*jetzt*)[a] *individuel*l wahr! Tage kommen *individuel*l, in welchen sie reden werden:
Selige *sind* die Sterilen und die *Leibes*höhlen,
welche (*de facto*)[a] nicht *ge*bären *lass*en *haben* und *die* Brustwarzen,
welche (*de facto*)[a] nicht genährt *haben*."

[1]aL, **2. Korrektor Codex Ephraemi** schreibt:
„Da, nimm (*jetzt*)[a] *individuel*l wahr! Tage kommen *individuel*l, in welchen sie reden werden:
Selige *sind* die Sterilen und die *Leibes*höhlen,
welche (*de facto*)[a] nicht *ge*bären *lass*en *haben* und *die* Brustwarzen,
welche (*de facto*)[a] nicht aus*reichend* genährt *haben*."

[1]aL, **Papyrus 075** schreibt („nimm (*jetzt*)[a] *individuel*l wahr!" `fehlt`):
„Da *individuel*l Tage kommen, in welchen sie reden werden:
Selige *sind* die Sterilen und die *Leibes*höhlen,
welche (*de facto*)[a] nicht *ge*bären *lass*en *haben* und *die* Brustwarzen,
welche (*de facto*)[a] nicht genährt *haben*."

[1]Da,
[1]nimm
[1](*jetzt*)[a]
[1]*individuel*l
[1]wahr!
[1]Tage
[1]kommen
[1]*individuel*l,
[1]in
[1]welchen
[1]sie
[1]reden
[1]werden:
[1]Selige
[1]*sind*
[1]Sterile
[1]und
[1]die
[1]*Leibes*höhlen,
[1]welche
[1](*de facto*)[a]
[1]nicht
[1]*ge*bären
[1]*lass*en
[1]*haben*
[1]und
[1]*die*
[1]Brustwarzen,
[1]welche
[1](*de facto*)[a]
[1]nicht
[1]genährt
[1]*haben*.

5 Mos 28.57
Mat 24.19
Mar 13.17
Luk 21.23

| 30.) | | 30.) | | |
|---|---|---|---|---|
| | | ℵ, B, C, R: 3 p ft md | | |
| τότε | | \|ἄρξονται\| | [1]Dann | |
| Dann | | \|individuell anfangen werden sie\| | [1]werden | |
| | | \|individuell beginnen werden sie\| | [1]sie | |
| [A: 3 p pl a1 kj md kt] | | if pr | [1]individuell | |
| [ἄρξωνται] | | λέγειν | [1]anfangen | |
| [(*de facto*) individuell anfangen *würden* sie] | | *zu* worten | [1]*zu* | |
| [(*de facto*) individuell beginnen *würden* sie] | | *die* Worte *zu gebrauchen* | [1]den | |
| | | *zu* sagen | [1]Bergen | |
| | | τοῖς | [1]*zu* | |
| *zu* | | den | [1]sagen*:* | Apk 6.16 |
| | dt ne pl | | Fallet | |
| ὄρεσιν | | | (*jetzt*)[a] | |
| *als erhöht* Sichtbaren | | *:* | auf | |
| Bergen | | | uns!, | |
| ℵ, A, B, C, R: 2 p pl a2 i! ig | | [ℵ2: 2 p pl a1 i! ig] | und | |
| \|πέσετε\| | | [πέσατε] | *zu* | |
| (*Jetzt*) fallet ihr | | | den | |
| prp ak | 1 p pl ak | | Hügeln*:* | Jes 2.19<br>Hos 10.8 |
| ἐφ' | ἡμᾶς | | Verhüllet | |
| auf | uns | !, | uns | |
| | | | (*jetzt*)[a]! | |
| καὶ | | | | |
| und | | *zu* | | |
| | dt ma pl | | | |
| τοῖς | βουνοῖς | | | |
| den | Geschwollenen | *:* | | |
| | Hügeln | | | |
| 2 p pl a1 i! ig | | *prp ak* | | |
| καλύψατε | | | | |
| (*Jetzt*) *als Anklage*ruf beendet ihr | | *in Bezug auf* | | |
| (*Jetzt*) verhüllet ihr | | - | | |
| (*Jetzt*) verdecket ihr | | - | | |
| (*Jetzt*) verschleiert ihr | | - | | |
| 1 p pl ak | | | | |
| ἡμᾶς | | | | |
| uns | | ! | | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„**Dann** *würden* **sie** (*de facto*)[a] **individuell anfangen** *zu* **den Bergen** *zu* **sagen**:“

| 31.) | | 31.) | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | Da, | |
| ὅτι | | εἰ | | |
| Da, | | wenn | [1]wenn | 1 Petr 4.17 |
| prp dt | | א, A, R, P 075 | | |
| ἐν | | τῷ | [1]sie | |
| in | | dem | [1]diese | |
| [i]mit | | | [1]Dinge | |
| aj dt ne | | dt ne | | |
| ὑγρῷ | | ξύλῳ | [1i]mit | |
| wasser*halt*igen | | Holz | [1]dem | |
| pn ak ne pl | | | | |
| ταῦτα | | | [1]wasser*halt*igen | |
| diese | | *Dinge* | [1]Holz* | *e: Holz des Menschlichen, Holz des Stabes Aarons |
| 3 p pl pr | | prp dt | | |
| ποιοῦσιν | | ἐν | [1]tun, | |
| tun sie, | | in | was | |
| machen sie | | [i]mit | *würde* | |
| | | aj dt ne | | |
| τῷ | | ξηρῷ | *dann* | |
| dem | | vertrockneten, | (*de facto*)[a] | |
| | | trockenen | | |
| pn ak ne | | | | |
| τί | | | *individuell* | |
| was | | *dann* | [i]mit | |
| 3 p a2 kj md dp kt | | | | |
| γένηται | | | dem | |
| (*de facto*) *individuell* werden *würde* es | | ? | vertrockneten | Hes 21.3 Spr 11.31 |
| (*de facto*) *individuell* geschehen *würde* es | | | geschehen? | |
| (*de facto*) sich entwickeln *würde* es | | | | |

[1]aL, Codex Vaticanus und Codex Ephraemi schreiben („dem“ fehlt):
„wenn sie diese *Dinge* [i]mit wasser*halt*igem Holz tun,“

| 32.) | | 32.) | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | [1]Es | |
| 3 p pl ipe md/ps | | 3 p pl ipe md/ps (Vorgang) | [1]wurden | |
| ἤγοντο | | | [1]aber | |
| Sich führen *ließen* sie | | geführt wurden sie | [1]auch | |
| | | | [1]anderweitige | |
| δὲ | | καὶ | [1]Verbrecher, | Mat 26.55 Mar 14.48 Luk 22.52 |
| aber | | auch | [1]*ja* | |
| aj no ma pl | | א, B: aj no ma pl | [1]zwei, | Jes 53.8+9+12 Luk 22.37 |
| ἕτεροι | | κακ-οῦργοι | zusammen | |
| anderweitige | | Übel-Wirker Verbrecher, A, C, R = 2 | *mit* | |
| | | nu no ma pl | ihm | |
| *ja* | | δύο zweie, A, R = 1 | geführt, | |
| prp dt | | 3 p dt ma | *um* | |
| σὺν | | αὐτῷ | (*de facto*)[a] | |
| samt | | ihm, | beseitigt | |
| zusammen *mit* | | | *zu* | |
| | | if a1 ps kt | werden. | |
| | | ἀν-αιρεθῆναι | | |
| *um* | | (*de facto*) hinauf-enthoben *zu* werden | | |
| | | (*de facto*) beseitigt *zu* werden. | | |

[1]aL, Codex Alexandrinus, Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben (Wortreihenfolge):
„*Es* wurden aber auch anderweitige zwei, *ja* Verbrecher,“

| 33.) | | 33.) |
|---|---|---|
| καὶ | ὅτε | [1]Und |
| Und | als | [1]als |
| ℵ, B, C, P 075: 3 p pl a2 ig | [A, R: 3 p pl a2 ig] | [1]sie |
| \|ἦλθον\| | [ἀπ-ἦλθον] | [1](*jetzt*)[a] |
| \|(*jetzt*) **gekommen** *waren* sie\| | [(*jetzt*) weg-gekommen *waren* sie] | [1]auf |
| prp ak | | [1]den |
| ἐπὶ | τὸν | [1]Ort |
| auf *zu* | den | [1]*zu* |
| | die | [1]gekommen |
| ak ma | | [1]*waren*, |
| τόπον | τὸν | den, |
| Ort, | den | *der* |
| Stätte | die | (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] |
| pt pr ak ma md/ps | pt pr ak ma md/ps (Zustand) | >>>Schädel<<< |
| καλούμενον | | gerufen |
| sich Rufen/*ass*ende(n) | Gerufenseiende(n) | wird, |
| sich Berufen/*ass*ende(n) | Berufenseiende(n) | *brach*ten |
| sich Einladen/*ass*ende(n) | Eingeladenseiende(n) | sie |
| pt pr ak ma md/ps (Vorgang) | | ihn |
| | | dort |
| Gerufenwerdende(n) | *als* | (*de facto*)[a] |
| Berufenwerdende(n) | | *an* |
| Eingeladenwerdende(n) | | *den* |
| ak ne | | Pfahl |
| Κρανίον | ἐκεῖ | und |
| *Zusammen*haltenden | dort | die |
| Schädel, | | Verbrecher, |
| | 3 p pl a1 kt | [w]den |
| | ἐσταύρωσαν | *einen*, |
| | (*de facto*) *an den* Stehenden *brach*ten sie | - *das* bleibt - |
| | (*de facto*) *an*pfahlten sie | [as]an |
| | (*de facto*) *an den* Pfahl *brach*ten sie | *den* |
| | (*de facto*) kreuzigten sie {*inform eines „T"*} | Recht*sbefindlich*en* |
| 3 p ak ma | | und |
| αὐτὸν | καὶ | [w]den |
| ihn | und | *anderen* |
| | ak ma pl | aber |
| τοὺς | κακ-ούργους | [as]an |
| die | Übel-Wirker | *den* |
| | Verbrecher, | Links*befindlich*en*. |
| pn ak ma | | |
| ὃν | | |
| welchen | *einen*, | |
| [w]den | | |
| | prp gn | |
| μὲν | ἐκ | |
| *das* bleibt, | aus | |
| | [as]an | |
| | aj gn ne pl | |
| | δεξιῶν | |
| *den* | Empfangenden | |
| | Empfang*ber*eiten | |
| | Recht*sbefindlich*en | |
| | pn ak ma | |
| καὶ | ὃν | |
| und | welchen | |
| | [w]den | |
| | | |
| | δὲ | |
| *anderen* | aber | |
| | prp gn | |
| | ἐκ | |
| *als* | aus | |
| | [as]an | |
| | aj gn ne pl | |
| | ἀρι-στερῶν | |
| *den* | fest[z]-Verwünschten[1] | |
| | Linken | |
| | Links*befindlich*en. | |

[1]aL,
**Codex Alexandrinus**
und
**Textus Receptus**
schreiben:
„Und
als
sie
(*jetzt*)[a]
auf
den
Ort
*zu*
weggekommen
*waren*,"

Heb 13.12

*e: Aufgrund der wörtlichen Übersetzung denkt vmtl. der „rechts neben Jesus *Befindlich*e" um: Luk 23.39-43

34.) 34.)

| | |
|---|---|
| ℵ, ℵ², A, C, R: | |
| ὁ | δὲ |
| Der | aber |
| hebrÜ: no ma | ℵ, ℵ², C, R: 3 p ipe |
| Ἰη-σοῦς | |ἔλεγεν| |
| Er *macht* Werden-*bedeutet* Rettung | |wortete er| |
| Er wird *fortdauernd-bedeutet* Rettung | |*die* Wort*e gebrauch*te er| |
| werden*mach*ende-Rettrufer | |sagte er| |
| Werden*mach*ende,-*der* Rettung *ist*, | |
| <JHWH>,-*der* Rettung *ist*, | |
| <JHWHs>-Rettrufer | |
| Je-sus | |
| Jöho-schua | |
| [A: 3 p a2 ig] | |
| [εἶπεν] | |
| [(*jetzt*) sagte er] | : |
| ℵ, ℵ², A, C, R: *vo* | *vo ma* |
| | πάτερ |
| *O* | Vater, |
| 2 p a2 i! ig | |
| ἄφ-ες | |
| (*jetzt*) weg-lasse du | *es* |
| (*jetzt*) erlasse du | |
| (*jetzt*) vergebe du | |
| 3 p pl dt ma | |
| αὐτοῖς | |
| ihnen | !, |
| | |
| οὐ | γὰρ |
| nicht | denn |
| | 3 p pl def pe |
| | οἴδασιν |
| | gewahren sie |
| | wahrnehmen sie, |
| pn ak ne | 3 p pl pr |
| τί | ποιοῦσιν |
| was | tun sie. |
| | machen sie |
| | ℵ, ℵ¹, ℵ², A, B, C, R: |
| | |
| *Als* | |
| pt pr no ma pl md/ps | pt pr no ma pl md/ps (Zustand) |
| δια-μεριζόμενοι | |
| *individuel*l durch-Teilende | durch-Geteiltseiende |
| *individuel*l durch*weg*-Teilende | durch*weg*-Geteiltseiende |
| *individuel*l durch*weg*-*Ver*teilende | *zum* durch*weg*-*Ver*teilen *Veranlaß*tseiende |
| pt pr no ma pl md/ps (Vorgang) | |
| | δὲ |
| durch-Geteiltwerdende | aber |
| durch*weg*-Geteiltwerdende | |
| *zum* durch*weg*-*Ver*teilen *Veranlaß*twerdende | |
| *prp ak* | |
| | τὰ |
| *bezüglich* | der |
| ak ne pl | 3 p gn ma |
| ἱμάτια | αὐτοῦ |
| *Be*riemten | seiner, |
| *mit* Riemen *Zusammengehal*ten*en* | |
| Gewänder, | |
| 3 p pl a2 ig | ℵ, B, C, R, P 075: |
| ἔβαλον | |
| (*jetzt*) warfen sie | |ein |
| ak ma | [A: ak ma pl] |
| |κλῆρον| | [κλήρους] |
| Los| | [Lose]. |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„**Aber der Jesus sagte** (*jetzt*)[a]*:*
*O* **Vater, erlasse** *es* **ihnen** (*jetzt*)[a]**!,**
**denn sie nehmen nicht wahr, was sie tun.**
**Aber** *als zum* **durch***weg* *Ver***teilen** *Veranlaß***tseiende** *bezüglich* **seiner** [d] **Gewänder**
**warfen sie** (*jetzt*)[a] **Lose.**“
[2]aL: Erster Teil des Textes nicht **1. Korrektor Codex Sinaiticus** und **Codex Vaticanus**

| | |
|---|---|
| [1]Aber[2] | |
| [1]der[2] | |
| [1]Jesus[2] | |
| [1]*gebrauch*te[2] | |
| [1]*die*[2] | |
| [1]Worte*:*[2] | Mat 5.38-42<br>Luk 6.27-31 |
| [1]*O*[2] | |
| [1]Vater,[2] | Jes 53.11<br>Apg 7.60 |
| [1]erlasse[2] | |
| [1]*es*[2] | |
| [1]ihnen[2] | 1 Kor 2.8<br>1 Tim 1.13<br>Apg 3.17 |
| [1](*jetzt*)[a]!,[2] | |
| [1]denn[2] | Hi 31.29<br>Mat 5.44<br>Luk 6.27+35<br>Röm 12.14+20 |
| [1]sie[2] | |
| [1]nehmen[2] | |
| [1]nicht[2] | |
| [1]wahr,[2] | |
| [1]was[2] | |
| [1]sie[2] | |
| [1]tun.[2] | |
| [1]Aber | |
| [1]*als* | |
| [1]*zum* | |
| [1]durch*weg* | |
| [1]*Ver*teilen | Ps 22.19 |
| [1]*Veranlaß*tseiende | |
| [1]*bezüglich* | |
| [1]seiner [d] Gewänder | |
| [1]warfen | |
| [1]sie | |
| [1](*jetzt*)[a] | |
| [1]*ein* | |
| [1]Los. | |

| 35.) | | 35.) |
|---|---|---|
| | | |
| καὶ | | |
| Und | dort | |
| | | |
| 3 p pl plpe | | |
| εἱστήκει | ὁ | |
| Stand genommen hatte es | das | |
| gestanden hatte es | | |
| | | |
| no ma | | |
| λαὸς | | |
| Gleichsprachige | als | |
| Volk | | |
| | | |
| pt pr no ma | | Variante 2 |
| θε-ωρῶν | (θεω-ρῶν) | |
| gesetztes-Sehendes | (den Einsetzer-Fließen/lassendes) | |
| Schauendes | (den Absetzer-Fließen/lassendes) | |
| | (den GOTT-Fließen/lassendes) | |
| | (Schauendes). | |
| | | |
| 3 p pl ipe | | |
| ἐξ-εμυκ-τήριζον | | |
| Ausdrücklich zum Brüllen-hüteten sie | ihn | |
| Ausdrücklich-die Nase rümpften sie | | |
| Außerordentlich-verspotten sie | | |
| | | |
| | | [A, B, C, R, P 075] |
| δὲ | [καὶ] | |
| aber | [auch] | |
| | | |
| | | no ma pl |
| οἱ | ἄρχοντες | |
| die | Anfänglichen | |
| | Rang anfänglichen | |
| | am Anfang Stehenden | |
| | Fürsten | |
| | | |
| [A, R: prp dt | | 3 p pl dt ma] |
| [σὺν | αὐτοῖς] | |
| [samt | ihnen] | |
| [zusammen mit] | | |
| | | |
| | | pt pr no ma pl |
| | λέγοντες | |
| als | Wortende | |
| | die Worte Gebrauchende | |
| | Sagende | |
| | | |
| | | |
| | : | |

[1]aL, Codex Vaticanus und Codex Ephraemi schreiben:
„Aber auch die Fürsten verspotteten ihn außerordentlich,
indem sie (wie folgt)[pt] sagten:“

Und
es
hatte
das
Volk
als
Schauendes
dort
gestanden.
[1]Aber
[1]die
[1]Fürsten
[1]verspotteten
[1]ihn
[1]außerordentlich,
[1]indem
[1]sie
[1](wie folgt)[pt]
[1]sagten:

Sach 12.10

Ps 22.7+8
Ps 69.20
Mat 20.19
Mar 10.34
Luk 18.32

[1]aL,
Codex Alexandrinus
und
Textus Receptus
schreiben:
„Aber
auch
die
Fürsten
verspotteten
ihn
außerordentlich
zusammen
mit
ihnen,
indem
sie
(wie folgt)[pt]
sagten:“

| aj ak ma pl | 3 p a1 kt | ohne (...) a+pt lesbar | |
|---|---|---|---|
| ἄλλους | ἔσωσεν | | |
| **Andere** | (*de facto*) **gerettet** *hat* **er,** | **Andere** | Luk 4.23 |
| | (*de facto*) **errettet** *hat* **er** | *hat* | |
| | (*de facto*) *in das* **Heil ge***bracht* *hat* **er** | **er** | |
| | (*de facto*) *in das* **Soziale ge***holfen* *hat* **er** | (*de facto*)[a] | |
| **3 p a1 i! ig** | **3 p ak ma** | | |
| σωσάτω | ἑ-αυτόν | **gerettet,** | |
| (*jetzt*) **rette er** | **sich-selber,** | **er** | |
| (*jetzt*) **errette er** | | **rette** | Ps 22.9 |
| (*jetzt*) *in das* **Heil** *bring***e er** | | **sich** | |
| (*jetzt*) *in das* **Soziale** *helf***e er** | | (*jetzt*)[a] | |
| | **ℵ, ℵ[1], A, C, R: pn no ma** | **selber,** | |
| εἰ | \|οὗτός\| | [1]**wenn** | |
| **wenn** | **\|dieser\|** | [1]**dieser** | |
| **[B: no ma]** | **3 p pr** | [1]**der** | Mat 16.16 Mar 8.29 Luk 9.20 Joh 20.31 |
| [υἱὸς] | ἐστιν | [1]**Christus,** | |
| **[Sohn]** | **ist er** | [1]**der** | |
| | **no ma** | [1]**des** | |
| ὁ | χριστὸς | [1]**Gottes** | |
| **der** | *sich als* **Brauchbar** *Erweisend***e** | [1]**ist,** | |
| | **Brauchbar***gemacht***e** | [1]**der** | Jes 42.1 (Mat 17.5) (Mar 9.7) Luk 9.35 |
| | **Bedarf***sgerecht***e** | [1]**Auserwählte!** | |
| | **Gemilderte** | | |
| | **Gesalbte** | | |
| | **Bestrichene** | | |
| | **Christus,** | | |
| **ℵ, A, C, R, P 075** | **[P 075: no ma]** | | |
| ὁ | [υἱὸς] | | |
| **der** | **[Sohn]** | | |
| | **gn ma** | | |
| τοῦ | θεοῦ | | |
| **des** | *Ein***setzers** | | |
| | *Ab***setzers** | | |
| | **Schau***end***en** | | |
| | **GOTTES,** | | |
| **ℵ, ℵ[1], B, C, P 075** | **aj no ma** | [1]aL, **1. Korrektor Codex Sinaiticus** schreibt: „**wenn dieser der Christus des Gottes ist, der Auserwählte!**“ | |
| ὁ | \|ἐκ-λεκτός\| | | |
| **der** | \|*mit* **Wort***en*[2]**-Aus***erkor***ene**[1]\| | | |
| | **\|Aus-Erwählte\|** | | |
| **[A, R:** | **aj no ma]** | | |
| | [ἐκ-λεκτός] | | |
| {*ein*} | [*mit* **Wort***en*[2]**-Aus***erkor***ener**[1]] | | |
| | **[Aus-Erwählter]** | | |
| | | | |
| | | | |
| **!** | | | |

[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„**wenn er Sohn ist, der Christus des Gottes, der Auserwählte!**“
[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**wenn dieser der Christus ist, der des Gottes, {*ein*} Auserwähl***ter***!**“
[1]aL, **Papyrus 075** schreibt:
„**wenn dieser der Christus, der Sohn des Gottes ist, der Auserwählte!**“

ohne (...) a+pt lesbar

| 36.) | | 36.) | |
|---|---|---|---|
| | א, B, P 075: 3 pl a1 ig | [A, C, C³, R: 3 p pl ipe] | |
| | \|ἐν-έπαιξαν\| | [ἐν-έπαιζον] | [1]Es |
| | \|(jetzt) innen-verletzten sie\| | [innen-verletzten sie] | [1]verhöhnten |
| | \|(jetzt) Innen-Spiel trieben sie | [Innen-Spiel trieben sie] | [1]ihn |
| | \|(jetzt) verhöhnten sie\| | [verhöhnten sie] | [1]aber |
| | | prp dt | [1](jetzt)[a] |
| | δὲ | | [1]die |
| | aber | zuorts | [1]Krieger, |
| | | aufgrund von | [1]als |
| | | - | [1]individuell |
| | 3 p dt ma | [A, B, C, C³, R, P 075] | [1]Herzukommende, |
| | αὐτῷ | [καὶ] | [1]ja |
| | ihm | [auch] | [1]als |
| | ihm | | [1]ihm |
| | ihn | | [1]Essig |
| | | no ma pl | [1]Herzubringende |
| | οἱ | στρατιῶται | |
| | die | Heerkämpfer | |
| | | Krieger | |
| | als | | |
| | | pt pr no ma pl md/ps dp | |
| | προσ-ερχόμενοι | | |
| | individuell Herzu-Kommende | | |
| | sich wie Pros-elyten Verhaltende | | |
| | | pt pr no ma pl md/ps dp (Zustand) | |
| | zum Herzu-Kommen Veranlaßtseiende | | |
| | zum sich wie Pros-elytenverhalten Veranlaßtseiende | | |
| | | pt pr no ma pl md/ps dp (Vorgang) | |
| | zum Herzu-Kommen Veranlaßtwerdende | | |
| | zum sich wie Pros-elytenverhalten Veranlaßtwerdende | | |
| | [C³, R] | | |
| | [καὶ] | | |
| | [und] | als | |
| | | ak ne | |
| | ὄξος | | |
| | Sauerscharfen | | |
| | Essig | | |
| | Essigwasser | | |
| | Weinessig | | |
| | pt pr no ma pl | 3 p dt ma | |
| | προσ-φέροντες | αὐτῷ | |
| | Herzu-Bringende | ihm | |
| | Herzu-Tragende | | |

Ps 22.7+8
Ps 69.20
Mat 20.19
Mar 10.34
Luk 18.32

Ps 69.22

[1]aL, **Codex Vaticanus** und **Papyrus 075** schreiben:
„*Es verhöhnten ihn* **aber auch** (*jetzt*)[a] **die Krieger,**
*als individuell* **Herzukommende,**
*ja als* **ihm Essig Herzubringende**“
[1]aL, **3. Korrektor Codex Ephraemi** und **Textus Receptus** schreiben (`ipe statt a`):
„*Es verhöhnten ihn* **aber auch die Krieger,**
*als individuell* **Herzukommende,**
**und** *als* **ihm Essig Herzubringende**“

[1]aL,
**Codex Alexandrinus**
und
**Codex Ephraemi**
schreiben
(`ipe statt a`):
„*Es*
*verhöhnten*
*ihn*
**aber**
**auch**
**die**
**Krieger,**
*als*
*individuell*
**Herzukommende,**
*ja*
*als*
**ihm**
**Essig**
**Herzubringende**“

ohne (...) a+pt lesbar

| 37.) | | 37.) | |
|---|---|---|---|
| | | | und<br>*als*<br>Sagende*:*<br>[1]Wenn<br>[1]du,<br>[1]*ja*<br>[1]du,<br>[1]der<br>[1]König<br>[1]der<br>[1]Juden<br>[1]bist,<br>[1]*so*<br>[1]rette<br>[1]dich<br>[1](*jetzt*)[a]<br>[1]selber! |
| | καὶ<br>**und** | *als* | |
| | pt pr no ma pl<br>λέγοντες<br>**Wortende**<br>*die* **Wort***e Gebrauch***ende**<br>**Sagende** | *:* | |
| | ϰ, B, C, R<br>εἰ<br>**Wenn** | 2 p no<br>σὺ<br>**du,** | |
| | 2 p pr<br>εἶ<br>**bist du,** | ὁ<br>**der** | |
| | no ma<br>βασιλεὺς<br>*Voran***schreitende**<br>*Fort***schritt** *Bestimm***ende**<br>*auf Veranlassung Auf***gestiegene**<br>**Regent**<br>**Regier***ungsvollmacht Ausüb***ene**<br>**König**<br>**König***sherrscher*<br>**Basis***geb***er** | | |
| | τῶν<br>**der** | hebrÜ: aj gn ma pl<br>Ἰουδαίων<br>**Dankendem** *Zugehöri***gen**<br>**Bekennendem** *Zugehöri***gen**<br>**Judäer**<br>**Juden** | |
| | ϰ, B, C, R<br>\|,\| | [A]<br>[?,] | |
| | \|*so*\| | 2 p a1 i! ig<br>σῶσον<br>(*jetzt*) **rette du**<br>(*jetzt*) **errette du**<br>(*jetzt*) *in das* **Heil** *bring***e du**<br>(*jetzt*) *in das* **Soziale** *helf***e du** | |
| | 3 p ak ma<br>σε-αυτόν<br>**dich-selber** | **!** | |

[1]aL,
**Codex Alexandrinus**
schreibt:
„**Du,**
**du**
**bist**
**der**
**König**
**der**
**Juden?,**
*so*
**rette**
**dich**
(*jetzt*)[a]
**selber!**“

1 Mos 49.10
Mat 2.2

Ps 3.2+3
Ps 22.9

38.) 38.)

3 p ipe
ἦν — δὲ — καὶ
War es — aber — auch

no fe — [A:
ἐπι-γραφὴ
Darauf-Geschriebenes — [als

pt pe no fe md/ps — pt pe no fe md/ps (Vorgang + Zustand)]
[ἐπι-γεγραμμένη]
[sich darauf-Schreiben/assenhabendes — Darauf-Geschriebenworden(seiend)es]

[C, C³, R: — pt pe no fe md/ps
[γεγραμμένη]
[als — sich Schreiben/assenhabendes

pt pe no fe md/ps (Vorgang + Zustand)] — prp dt
ἐπ'
Geschriebenworden(seiend)es] — aufgrund von

3 p dt ma — ℵ, A, C³, R: prp dt — dt ne pl — prp dt
αὐτῷ — γράμμασιν
ihm — in — Schriftzeichen — in
Buchstaben,

aj dt ne pl — [A, C³, R]
ἑλληνικοῖς — [καὶ]
als ölig / sich erbarmend dargestellten — [und]
als gewunden dargestellten
als anschmiegsam dargestellten
griechischen
hellenischen

ℵ, A, C³, R: prp dt — aj dt ne pl — [A, C³, R]
ῥωμαϊκοῖς — [καὶ]
in — der Art der Anstrengung — [und]
der Art des Hohen
römischen

ℵ, A, C³, R: prp dt — aj dt ne pl
ἑβραϊκοῖς
in — jenseitigem — :
hinübergehenden
hebräischen

[A, R: pn no ma — 3 p pr]
[οὗτος — ἐστὶν]
[Dieser — ist er]

no ma
ὁ — βασιλεὺς
der — Voranschreitende
Fortschritt Bestimmende
auf Veranlassung Aufgestiegene
Regent
Regierungsvollmacht Ausübene
König
Königsherrscher
Basisgeber

hebrÜ: aj gn ma pl
τῶν — Ἰουδαίων
der — Dankendem Zugehörigen
Bekennendem Zugehörigen
Judäer
Juden

ℵ, B, C, C³, P 075 — ℵ, B, P 075: pn no ma
|οὗτος|
|ist er — dieser|.

[1]aL, Codex Alexandrinus schreibt (auch Wortreihenfolge):
„Es war aber auch Daraufgeschriebenes als sich darauf Schreiben/assenhabendes
aufgrund von ihm in Buchstaben, in griechischen und in römischen und in hebräischen:
Dieser ist der König der Juden."
[1]aL, Codex Ephraemi schreibt („ist dieser" fehlt):
„Es war aber auch Daraufgeschriebenes als sich Schreiben/assenhabendes
aufgrund von ihm in Buchstaben, in griechischen, in römischen, in hebräischen:
Der König der Juden."
[1]aL, 3. Korrektor Codex Ephraemi schreibt („ist dieser" fehlt):
„Es war aber auch Daraufgeschriebenes als sich Schreiben/assenhabendes
aufgrund von ihm in Buchstaben, in griechischen und in römischen und in hebräischen:
Der König der Juden."
[1]aL, Textus Receptus schreibt (auch Wortreihenfolge):
„Es war aber auch Daraufgeschriebenes als sich Schreiben/assenhabendes
aufgrund von ihm in Buchstaben, in griechischen und in römischen und in hebräischen:
Dieser ist der König der Juden."

[1]Es
[1]war
[1]aber
[1]auch
[1]Daraufgeschriebenes — Mat 27.37
[1]aufgrund
[1]von
[1]ihm
[1]in — als Gegensatz zu: Röm 2.29, 2 Kor 3.6
[1]Buchstaben,
[1]in
[1]griechischen,
[1]in
[1]römischen,
[1]in
[1]hebräischen:
[1]Der
[1]König
[1]der — 1 Mos 49.10, Mat 2.2
[1]Juden
[1]ist
[1]dieser.

[1]aL,
2. Korrektor Codex Sinaiticus,
Codex Vaticanus
und
Papyrus 075
schreiben:
„Es
war
aber
auch
Daraufgeschriebenes
aufgrund
von
ihm:
Der
König
der
Juden
ist
dieser."

**Einschub:**

**Bezüglich**

**der**

*mit an einen* **Stehen***den* **Ge***brach***ten**
***Mit*angepfahlten**
*mit an den* **Pfahl Ge***brach***ten**
**{***inform eines „T"***}** *Mit***gekreuzigten**

39.) 39.)

nu no ma

| | |
|---|---|
| εἷς | δὲ |
| **Einer** | **aber** |

| | |
|---|---|
| τῶν | |
| **der** | *auch* |

| pt a1 gn ma pl ig | aj gn ma pl |
|---|---|
| κρεμασθέντων | κακ-ούργων |
| (*jetzt*) **gehängtworden(seiend)en** | **Übel-Wirker** |
| (*jetzt*) *auf***gehängtworden(seiend)en** | **Verbrecher** |

| 3 p ipe | 3 p ak ma |
|---|---|
| ἐβλασ-φήμει | αὐτὸν |
| *als* **Schaden-erklärte er** | **ihn** |
| **lästerte er** | |
| **verunglimpfte er** | |
| **blas-phemisch** *red***ete er** | |

| ℵ, A, C, R: | pt pr no ma |
|---|---|
| | λέγων |
| *als* | **Wortender** |
| | *die* **Worte** *Gebrauch***ender** |
| | **Sagender** |

:

| | |
|---|---|
| οὐχὶ | |
| **Ist'***s* **nicht** *so***,** | *daß* |

| 2 p no | 2 p pr |
|---|---|
| σὺ | εἶ |
| **du,** | **bist du** |

| | no ma |
|---|---|
| ὁ | χριστός |
| **der** | *sich als* **Brauchbar** *Erweisend***e** |
| | **Brauchbar***gemacht***e** |
| | **Bedarf***sgerecht***e** |
| | **Gemilderte** |
| | **Gesalbte** |
| | **Bestrichene** |
| | **Christus** |

**?**

| 2 p a1 i! ig | 3 p ak ma |
|---|---|
| σῶσον | σε-αυτὸν |
| (*Jetzt*) **rette du** | **dich-selber** |
| (*Jetzt*) **errette du** | |
| (*Jetzt*) *in das* **Heil** *bring***e du** | |
| (*Jetzt*) *in das* **Soziale** *helf***e du** | |

| | 2 p pl ak |
|---|---|
| καὶ | ἡμᾶς |
| **und** | **uns** |

**!**

[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„**lästerte ihn**:"

**Einschub:**

**Bezüglich**

**der**

***Mit*angepfahlten**

Mat 27.44
Mar 15.32

**Einer**

**aber**

**der**

**Verbrecher,**

siehe
Luk 23.33

*der*

(*jetzt*)[a]

*auch*

(*in der Folge*)[pt]

*auf***gehängt**

**worden**

**war,**

[1]**lästerte**

[1]**ihn,**

[1]*indem*

[1]*er*

[1](*wie folgt*)[pt]

[1]**sagte***:*

**Ist'***s*

**nicht**

*so***,**

**daß**

**du,**

*ja*

**du,**

**der**

**Christus**

**bist?**

**Rette**

**dich**

(*jetzt*)[a]

**selber**

**und**

**uns!**

| 40.) | | 40.) |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| *Als* | {*dadurch*} | |
| | pt a1 no ma ps ig | |
| | ἀπο-κριθεὶς | |
| | (*jetzt*) **von**-*der Frage her zur* Be**urteil**ung *Veranlaß***tworden(seiend)er** | |
| | (*jetzt*) *zur* **Antwort** *Veranlaß***tworden(seiend)er** | |
| | | |
| δὲ | ὁ | |
| **aber** | **der** | |
| aj no ma | ℵ, B, C: | |
| ἕτερος | | |
| **anderweitige** | \|*als* | |
| pt pr no ma | 3 p dt ma | |
| \|ἐπι-τιμῶν | αὐτῷ\| | |
| *dar***auf***hin-Be***wertetender** | **ihm\|** | |
| \|*dar***auf***hin-ein* **Wert***urteil Abgeb***ender** | **ih***n***\|** | |
| \|**Verwarnend**er | **ih***n***\|** | |
| [A, R: 3 p ipe] | 3 p dt ma] | |
| [ἐπ-ετίμα] | αὐτῷ] | |
| [*dar***auf***hin-be***wertete er** | **ih***n***]** | |
| [*dar***auf***hin-ein* **Wert***urteil abgab* **er** | **ihm]** | |
| [*eine* **Verwarn***ung ausprach* **er** | **ihm]** | |
| ℵ, B, C: 3 p a2 ig / ipe | [A, R: | |
| \|ἔφη\| | | |
| \|(*jetzt*) **erklärte er / erklärte er\|** | [*als* | |
| \|(*jetzt*) *sich* **äußerte er /** *sich* **äußerte er\|** | | |
| \|(*jetzt*) **versicherte er / versicherte er\|** | | |
| pt pr no ma] | | |
| [λέγων] | | |
| **Wortender]** | : | |
| [*die* **Wort***e Gebrauch***ender]** | | |
| **[Sagender]** | | |
| ℵ | [ℵ², A, B, C, R] | |
| \|οὐ\| | [οὐ-δὲ] | |
| \|**Nicht**\| | **[nicht-aber** *auch***]** | |
| 2 p pr md/ps | 2 p pr md/ps (Zustand) | |
| φοβῇ | | |
| **i***ndividuel***l fürchtest du** | *zum* **Fürchten** *veranlaß***t bist du** | |
| **i***ndividuel***l** *Ehr***furcht** *erweis***t du** | *zum Ehr***furcht***erweis***en** *veranlaß***t bist du** | |
| 2 p pr md/ps (Vorgang) | 2 p no | |
| | σὺ | |
| *zum* **Fürchten** *veranlaß***t wirst du,** | **du,** | |
| *zum Ehr***furcht***erweis***en** *veranlaß***t wirst du** | | |
| bei ps: *prp ak* | | |
| | τὸν | |
| *in Bezug auf* | **den** | |
| ak ma | | |
| θεόν | ὅτι | |
| *Ein***setzer** | **da** | |
| *Ab***setzer** | | |
| **Schau***end***en** | | |
| **GOTT,** | | |
| | prp dt | |
| | ἐν | |
| *doch* | **in** | |
| | pna dt ne | |
| τῷ | αὐτῷ | |
| **dem** | **selben** | |
| dt ne | ℵ, ℵ², B, R: 3 p pr | |
| κρίματι | \|εἶ\| | |
| **Urteil** | **\|bist du\|** | |
| **Gericht***sspruch* | | |
| [C: 3 p pl pr] | | |
| [ἐσμεν] | | |
| **[sind wir]** | **?** | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„*sprach* **ihm** *eine* **Verwarn***ung aus*, *indem er* (*wie folgt*)[a] **sagt***e:*
**Fürchtest du,** *ja* **du,** *individuel***l aber auch den Gott nicht,**
**da du** *doch* **in demselben Urteil bist?**“

[1]aL, **Codex Ephraemi** schreibt:
„**erklärte** (*jetzt*)[a] *als* **ih***n* **Verwarnender***:*
**Fürchtest du,** *ja* **du,** *individuel***l aber auch den Gott nicht,**
**da wir** *doch* **in demselben Urteil sind?**“

**Aber der anderweitige,** *der* {*dadurch*} (*jetzt*)[a] (*in der Folge*)[pt] *zur* **Antwort** *veranlaß***t worden war,** [1]**erklärte** [1](*jetzt*)[a] [1]*als* [1]**ih***n* [1]**Verwarnender***:* [1]**Fürchtest** [1]**du,** *ja* **du,** [1]**i***ndividuel***l** [1]**den** [1]**Gott** [1]**nicht,** [1]**da** [1]**du** [1]*doch* [1]**in** [1]**demselben** [1]**Urteil** [1]**bist?**

siehe Luk 23.33

Luk 23. 41

[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus** und **Codex Vaticanus** schreiben:
„**erklärte** (*jetzt*)[a] *als* **ih***n* **Verwarnender***:* **Fürchtest du,** *ja* **du,** *individuel***l aber auch den Gott nicht, da du** *doch* **in demselben Urteil bist?**“

ohne (...) a+pt lesbar

| 41.) | | 41.) |
|---|---|---|
| | | 1 p pl no |
| καὶ | ἡμεῖς | |
| Und | wir, | |
| | | av |
| μὲν | δι-καίως | |
| das bleibt | durchweg-brennenderweise | |
| zwar | aufzeigenderweise | |
| | gerechterweise | |
| | rechtgemäßerweise | |
| | | |
| | | |
| die | | |
| | | aj ak ne pl |
| ἄξια | | |
| aufgrund der Unbewährtheit uns zu führen als angemessener Lohn erachteten | | |
| würdigen | | |
| angemessen würdigen | | |
| | | prp gn |
| γὰρ | | |
| denn | betreffs | |
| | betreffend | |
| pn gn ne pl | | 3 p pl a1 kt |
| ὧν | ἐπράξαμεν | |
| welcher | (de facto) praktiziert haben wir, | |
| wdie | (de facto) angewendet haben wir | |
| 1 p pl pr | | pn no ma |
| ἀπο-λαμβάνομεν | | οὗτος |
| davon-nehmen wir | | Dieser |
| entsprechend-in Empfang nehmen wir. | | |
| | | pn ak ne |
| δὲ | | οὐ-δ-ὲν |
| aber | | nicht-aber-ein |
| aj no ne | | 3 p a1 kt |
| ἄ-τοπον | | ἔπραξεν |
| Un-Orthaftes | | (de facto) praktiziert hat er |
| dem Ort-nicht angemessenes | | (de facto) angewendet hat er |
| nicht-am richtigen Ort befindliches | | |
| Ungehöriges | | |
| Sonderbares | | |
| | | |
| | | |
| ! | | |

| | |
|---|---|
| Und | |
| wir | |
| zwar | |
| aufzeigenderweise, | |
| denn | |
| wir | |
| nehmen | |
| entsprechend | |
| die | |
| aufgrund | |
| der | |
| Unbewährtheit | |
| uns | |
| zu | |
| führen | |
| als | |
| angemessener | |
| Lohn | |
| erachteten, | |
| wdie | |
| betreffend | |
| wir | |
| (de facto)a | |
| praktiziert | Röm 1.24+26 |
| haben, | |
| in | |
| Empfang. | |
| Dieser | |
| aber | |
| hat | |
| (de facto)a | |
| aber | |
| nicht | |
| ein | |
| Ungehöriges | |
| praktiziert! | |

42.) 42.)

3 p ipe — a, B, C, P 075:

| | | |
|---|---|---|
| καὶ | ἔλεγεν | |
| Und | wortete er<br>*die* Wort*e gebrauch*te er<br>sagte er | \|: |

vo — hebrÜ: vo ma

| | |
|---|---|
| | \|Ἰη-σοῦ\| |
| *O*, | Er *mach*t Werden-*bedeutet* Rettung\|<br>\|Er wird *fortdauernd-bedeutet* Rettung\|<br>\|Werden*mach*ender-Rettrufer\|<br>\|Werden*mach*ender-*der* Rettung *ist*\|<br>\|<JHWH>-*der* Rettung *ist*\|<br>\|<JHWHs>-Rettrufer\|<br>\|Je-sus,\|<br>\|Jöho-schua\| |

[a², A, C², R: dt

| | |
|---|---|
| | [τῷ |
| [*zu* | dem |

hebrÜ: dt ma]

| | |
|---|---|
| Ἰη-σοῦ] | |
| Er *mach*t Werden-*bedeutet* Rettung]<br>[Er wird *fortdauernd-bedeutet* Rettung]<br>[Werden*mach*enden-Rettrufer]<br>[Werden*mach*enden-*der* Rettung *ist*]<br>[<JHWH>-*der* Rettung *ist*]<br>[<JHWHs>-Rettrufer]<br>[Je-sus,]<br>[Jöho-schua] | :] |

2 p a1 i! ps kt (Zustand / Vorgang)

| | |
|---|---|
| μνήσθητί | |
| (*de facto*) erinnert sei / werde du | |
| (*de facto*) *zum in das* Gedächtnis *ruf*en *veranlaß*t sei / werde du | |

prp gn — 1 p gn

| | | |
|---|---|---|
| | μου | |
| *zugunsten* | meiner | !, |

[A, C², R: *vo ma* — vo ma]

| | |
|---|---|
| | [κύριε] |
| [*o*, | Geltender] |
| | [Herr,] |

2 p a2 kj dp kt

| | |
|---|---|
| ὅτ-αν | ἔλθῃς |
| wann-gleichsam | (*de facto*) kommen *würde*st / *sollt*est du |
| wenn-*der* Fall *eintritt*, *daß* | |

א, a², A, C, C²: prp dt — dt

| | |
|---|---|
| \|ἐν | τῇ |
| \|in | der / dem |

dt fe — 2 p gn

| | |
|---|---|
| βασιλείᾳ | σου\| |
| *voran*schreitenden *Mann*schaft | deiner\| |
| \|*den Fort*schritt *bestimm*enden *Mann*schaft | deiner\| |
| \|*auf Veranlassung auf*gestiegenen *Mann*schaft | deiner\| |
| \|Regentschaft | deiner\| |
| \|Regierung | deiner\| |
| \|Königsherrschaft, | deiner\| |
| \|Königreich | deinem\| |
| \|Königtum | deinem\| |
| \|basis*gebenden Mann*schaft | deiner\| |

[B, R, P 075: ak fe — ak

| | |
|---|---|
| [εἰς | τὴν |
| [hinein in | die / das |

ak fe — 2 p gn]

| | |
|---|---|
| βασιλείᾳ | σου] |
| *voran*schreitende *Mann*schaft | deine] |
| [*den Fort*schritt *bestimm*ende *Mann*schaft | deine] |
| [*auf Veranlassung auf*gestiegene *Mann*schaft | deine] |
| [Regentschaft | deine] |
| [Regierung | deine] |
| [Königsherrschaft, | deine]. |
| [Königreich | dein] |
| [Königtum | dein] |
| [basis*gebende Mann*schaft | deine] |

[1]aL, Codex Alexandrinus und 2. Korrektor Codex Ephraemi schreiben
„Und er sagte *zu* dem Jesus*:* Werde (*de facto*)[a] *zugunsten* meiner erinnert!, *o*, Herr,
wann du gleichsam (*de facto*)[a] in deiner [d] Königsherrschaft kommen *würde*st.“
[1]aL, Codex Vaticanus und Papyrus 075 schreiben:
„Und er sagte*: O*, Jesus, werde (*de facto*)[a] *zugunsten* meiner erinnert!,
wann gleichsam du (*de facto*)[a] hinein in deine [d] Königsherrschaft kommen kommen *würde*st.“
[1]aL, Textus Receptus schreibt:
„Und er sagte *zu* dem Jesus*:* Werde (*de facto*)[a] *zugunsten* meiner erinnert!, *o*, Herr,
wann gleichsam du (*de facto*)[a] hinein in deine [d] Königsherrschaft kommen kommen *würde*st.“

[1]Und
[1]er
[1]sagte*:*
[1]*O*,
[1]Jesus,
[1]werde
[1](*de facto*)[a]
[1]*zugunsten*
[1]meiner
[1]erinnert!,
[1]wann
[1]du
[1]gleichsam
[1](*de facto*)[a]
[1]in
[1]deiner [d] Königsherrschaft
[1]kommen
[1]*würde*st.

Ps 106.4

Luk 1.32
Mat 16.28

[1]aL,
2. Korrektor Codex Sinaiticus
schreibt:
„Und
er
sagte*:*
*zu*
dem
Jesus*:*
Werde
(*de facto*)[a]
*zugunsten*
meiner
erinnert!,
wann
du
gleichsam
(*de facto*)[a]
in
deiner [d] Königsherrschaft
kommen
*würde*st.“

43.) 43.)

| | | |
|---|---|---|
| | | 3 p a2 ig |
| καὶ | | εἶπεν |
| Und | | (*jetzt*) sagte er |
| | [A, R: | hebrÜ: no ma] |
| [ὁ | | Ἰη-σοῦς] |
| [der | | Er *macht* Werden-*bedeutet* Rettung] |
| | | [Er wird *fortdauernd-bedeutet* Rettung] |
| | | [werden*mach*ende-Rettrufer] |
| | | [Werden*mach*ende-*der* Rettung *ist*] |
| | | [<JHWH>-*der* Rettung *ist*] |
| | | [<JHWHs>-Rettrufer] |
| | | [Je-sus] |
| | | [Jöho-schua] |
| | 3 p dt ma | |
| | αὐτῷ | |
| *zu* | ihm | : |
| hebrÜ: inde | [B, P 075: | 2 p dt] |
| ἀμήν | | [σοι] |
| Treulich *ist es* | [- | dir] |
| *Es ist wahrheitsge*treu | [*zu*] | |
| *Es ist* treu*ewürd*ig | [-] | |
| Wahrlich | | |
| Amen | | |
| | 1 p pr | ℵ, A, C, R: |
| λέγω | | |
| worte ich | | \|- |
| *die* Wort*e gebrauch*e ich | | \|*zu*\| |
| sage ich | | \|-\| |
| | 2 p dt | |
| \|σοι\| | | |
| dir\| | | : |
| | | – |
| | av | |
| σ-ήμερον | | |
| *Diese*n-Tag | | - |
| heute | | : |
| | prp gn | 1 p gn |
| μετ’ | | ἐμοῦ |
| mit | | meiner |
| Mit | | m*ir* |
| | 2 p ft md (dp) | prp dt |
| ἔσῃ | | ἐν |
| *individuel*l sein wirst du | | in |
| | | hebrÜ: dt ma |
| (τῷ | | παρα-δεί-σῳ) |
| (dem | | Frucht-Tür-Gestützten) |
| (der | | Frucht-Myrte) |
| (dem | | Para-die-s) |
| | | grÜ: dt ma |
| τῷ | | παρα-δείσῳ |
| der | | unmittelbaren-*Um*mauerung |
| dem | | Para-dies. |

[1]Und
[1]er
[1]sagte
[1](*jetzt*)[a]
[1]*zu*
[1]ihm*:*
[1]Wahrlich[2],
[1]ich[2]
[1]*gebrauche*[2]
[1]*die*[2]
[1]Worte[2]
[1]*zu*[2]
[1]dir[2]*:*
[1]*Diesen*[2]
[1]Tag[2]
[1]wirst[2]
[1]du[2]
[1]*individuel*l[2]
[1]mit[2]
[1]m*ir*[2]
[1]in[2]
[1]dem[2]
[1]Paradies[2]
[1]sein[2].

2 Kor 12.4
Apk 2.7

[1]aL,
Codex Alexandrinus
und
Textus Receptus
schreiben:
„Und
*es*
sagte
(*jetzt*)[a]
der
Jesus
*zu*
ihm*:*
Wahrlich,
ich
*gebrauche*
*die*
Wort*e*
*zu*
dir*:*“

[1]aL, Codex Vaticanus und Papyrus 075 schreiben (Wortreihenfolge):
„Und er sagte (*jetzt*)[a] *zu* ihm*:* Wahrlich, ich *gebrauche* *zu* dir *die* Wort*e:*“
[2]aü, gemäß Codex Sinaiticus, Codex Alexandrinus, Codex Ephraemi und Textus Receptus:
„Wahrlich, ich *gebrauche* *die* Wort*e* *zu* dir heute*:*
Du wirst *individuel*l mit m*ir* in dem Paradies sein.“
[2]aü, gemäß Codex Vaticanus und Papyrus 075 (Wortreihenfolge):
„Wahrlich, ich *gebrauche* *zu* dir *die* Wort*e* heute*:*
Du wirst *individuel*l mit m*ir* in dem Paradies sein.“

*Völlige Be*schattung
Finsternis
-
Jesu

Worte
Erwogenes
Erwähltes
Rechnung*slegen*
Log*ik*

am

Stehenden
Pfahl
Kreuz {*inform eines „T“*}
-
Golgatha : Tod
-
Hauptmann
-
Weiber

44.) 44.)

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ℵ: | 3 p ipe | no fe |
| | \|καὶ | ἦν | ὥρα |
| | \|Und | war sie | *die* Zeitspanne |
| | | | \|Stunde |
| | | [A, C³, R: 3 p ipe | |
| | ὡσ-εὶ\| | [ἦν | δὲ |
| | wie-wenn\| | [War sie | aber |
| | etwa\| | | |
| | | | no fe] |
| | ὡσ-εὶ | | ὥρα] |
| | wie-wenn | *die* | Zeitspanne] |
| | [etwa] | | [Stunde] |
| | [B, C, P 075: | 3 p ipe | av |
| | [καὶ | ἦν | ἤδη |
| | [Und | war sie | schon |
| | | | [bereits |
| | | | no fe] |
| | ὡσ-εὶ | | ὥρα] |
| | wie-wenn | *die* | Zeitspanne] |
| | etwa] | | [Stunde] |
| | | nu no fe | ℵ |
| | | ἕκτη | |
| | *die* | sechste | \|·\| |
| | [ℵ², A, B, C, C³, R] | | no ma |
| | [καὶ] | | σκότος |
| | [und] | *eine* | *völlige Be*schattung |
| | | | Finsternis |
| | | | 3 p a2 md dp kt |
| | | ἐγένετο | |
| | | (*de facto*) *individuel*l wurde es | |
| | | (*de facto*) *individuel*l geschah es | |
| | | (*de facto*) sich entwickelte es | |
| | prp ak | aj ak fe | |
| | ἐφ’ | ὅλην | τὴν |
| | auf *zu* | ganze | das |
| | | | die |
| | ak fe | prp gn | |
| | γῆν | ἕως | |
| | Erdland | bis *zu* | *der* |
| | Erde | | |
| | gn fe | | aj gn fe |
| | ὥρας | | ἐνάτης |
| | Zeitspanne | *der* | Neunten, |
| | Stunde | | |

[1]aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus schreibt:
„Und *es* war etwa *die* sechste Stunde
und *eine* Finsternis entwickelte sich (*de facto*)[a] *individuel*l auf die ganze Erde *zu*.“
[1]aL, Codex Alexandrinus, 3. Korrektor Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben:
„Aber *es* war etwa *die* sechste Stunde,
und *eine* Finsternis entwickelte sich (*de facto*)[a] *individuel*l auf die ganze Erde *zu*.“
[1]aL, Codex Vaticanus, Codex Ephraemi und Papyrus 075 schreiben:
„Und *es* war etwa bereits die sechste Stunde,
und *eine* Finsternis entwickelte sich (*de facto*)[a] *individuel*l auf die ganze Erde *zu*.“

Finsternis
-
Jesu
Worte
am
Pfahl
-
Golgatha: Tod
-
Hauptmann
-
Weiber

[1]Und
[1]*es*
[1]war
[1]etwa
[1]*die*
[1]sechste
[1]Stunde*:*
[1]*Eine*
[1]Finsternis
[1]entwickelte
[1]sich
[1](*de facto*)[a]
[1]bis
[1]*zur*
[1]neunten
[1]Stunde
[1]auf
[1]die
[1]ganze
[1]Erde
[1]*zu*,

Mat 27.45-56
Mar 15.33-41
Joh 19.25-30

Am 8.9

interlinearer |Text| = danebenstehend eine abweichende Lesart: [Text] - gelb = ausgewählter Text der Interlinear-Übersetzung - unterstrichen = DaBhaR-Konkordanz
ef = Endpunkt, ig = Anfangspunkt, kp = Zusammenziehung in einem Punkt, kt = Tatsache feststellend, gm = Sprichwort (Auslegung!) – md/ps = medio-passiv

ohne (...) a+pt lesbar

| 45.) | 45.) | | |
|---|---|---|---|
| | א, B, C, P 075: | | |
| \|τοῦ | \|der | [1]ausgrund | |
| | | [1]des | |
| | gn ma | | |
| ἡλίου | vollen Auswuchs Habenden | [1](de facto)[a] | |
| | Sonne | [1](fortlaufenden)[pt] | |
| | prp gn | [1]Ausgehens | |
| | | | |
| ausgrund | \|durchweg | [1]und | |
| | \|während\| | [1]Fehlens | |
| | | [1]der | |
| | | | |
| des | | [1]Sonne, | |
| | | [1]aber | |
| | א, C, P 075: pt a2 gn ma kt | | |
| ἐκ-λιπόντος\| | (de facto) Aus-Fehlenden\| | [1]der | |
| | \|(de facto) ausgehen-und Fehlenden\| | [1]Vorhang | |
| | [B: aS] | | |
| [ἐκ-λειπόντος] | | [1]des | 2 Mos 26.31+35<br>Heb 9.3 |
| | [A, C³, R: | [1]Tempels | |
| [καὶ | [und | [1]wurde | |
| | 3 p a1 ps kt | | |
| ἐσκοτίσθη | (de facto) völlig verschattet wurde sie | [1](jetzt)[a] | |
| | (de facto) verfinstert wurde sie | [1]mittig | |
| | | | |
| ὁ | die | [1]zerissen. | Heb 10.19+20 |
| | no ma] | | |
| ἥλιος] | vollen Auswuchs Habende | [1]aL, | |
| | [Sonne], | Codex Alexandrinus | |
| | [A, R] | und | |
| [καὶ] | [und] | Textus Receptus | |
| | 3 p a1 ig | schreiben: | |
| ἐσχίσθη | (jetzt) zerrissen wurde er | „und | |
| | (jetzt) zerspalten wurde er | die | |
| | א, B, C, C³ | | |
| \|δὲ\| | \|aber\| | Sonne | |
| | | wurde | |
| τὸ | der | (de facto)[a] | |
| | no ne | verfinstert, | |
| κατα-πέτασμα | Herab-Flügelnde | | |
| | von oben herab-wie ein Flügel Bedeckende | und | |
| | Vorhang | der | |
| | | Vorhang | |
| τοῦ | des | des | |
| | gn ma | Tempels | |
| ναοῦ | Tempels | wurde | |
| | aj ak ne | (jetzt)[a] | |
| μέσον | mittig. | mittig | |
| | | zerissen.“ | |

[1]aL, 3. Korrektor Codex Ephraemi schreibt („aber“ statt „und“):
„und die Sonne wurde (de facto)[a] verfinstert,
aber der Vorhang des Tempels wurde (jetzt)[a] mittig zerissen.“

46.) 46.)

καὶ
Und als

pt a1 no ma ig — prp dt
φωνήσας
(jetzt) die Stimme Erschallenlassender — infolge von
(jetzt) Ruf Ertönenlassender — [1]mit

dt fe — aj dt fe
φωνῇ — μεγάλῃ
einer Stimme, — einer großen,

hebrÜ: no ma
ὁ — Ἰη-σοῦς
der — Er macht Werden-bedeutet Rettung
Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung
werdenmachende-Rettrufer
Werdenmachende,-der Rettung ist,
<JHWH>,-der Rettung ist,
<JHWHs>-Rettrufer
Je-sus
Jöho-schua

3 p a2 kp
εἶπεν
(alles überschauend) sagte er :

vo — vo ma — prp ak
πάτερ — εἰς
O Vater, — hinein in
[h]in

ak fe pl — 2 p gn
χεῖράς — σου
die Hände, — deinerseits
deine,

Ps 31.6
Apg 7.59

א, A, B, C: 1 p pr md/ps — 1 p pr md/ps (Vorgang)
|παρα-τίθεμαι|
|individuell neben-setze ich — zum Neben-Setzen veranlaßt werde ich
|individuell unmittelbar-setze ich — zum Unmittelbar-Setzen veranlaßt werde ich
|individuell anbefehle ich — zum Anbefehlen veranlaßt werde ich

1 p pr md/ps (Zustand) — [R: 1 p ft md]
[παρα-θήσομαι]
zum Neben-Setzen veranlaßt bin ich| — [individuell neben-setzen werde ich]
zum Unmittelbar-Setzen veranlaßt bin ich| — [individuell unmittelbar-setzen werde ich]
zum Anbefehlen veranlaßt bin ich| — [individuell anbefehlen werde ich]

no ne — 1 p gn
τὸ — πνεῦμά — μου
den Geist, — meinerseits !
die Atmung — meine

א, B, C: — pn ak ne
|τοῦτο — δὲ|
|Als dies — aber|

[A, R: — pn ak ne pl]
[καὶ — ταῦτα]
[Und als — diese Dinge]

pt a2 no ma ig — 3 p a1 kt
εἰπὼν — ἐξ-έπνευσεν
(jetzt) Gesagthabender — (de facto) aus-geistete er
(de facto) den Geist[2]-aushauchte[1] er.

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„O Vater, [h]in deine Hände befehle ich individuell meinen [d] Geist an!
Und nachdem er diese Dinge (jetzt)[a] (in der Folge)[pt] gesagt hatte,
hauchte er (de facto)[a] den Geist aus.“

[1]aL, **Textus Receptus** schreibt:
„O Vater, [h]in deine Hände werde ich individuell meinen [d] Geist anbefehlen!
Und nachdem er diese Dinge (jetzt)[a] (in der Folge)[pt] gesagt hatte,
hauchte er (de facto)[a] den Geist aus.“

Und
als
(jetzt)[a]
[1]mit
großer
Stimme
die
Stimme
Erschallenlassender
sagte
der
Jesus
(alles überschauend)[pt]:
[1]O
[1]Vater,
[1][h]in
[1]deine
[1]Hände
[1]befehle
[1]ich
[1]individuell
[1]meinen [d] Geist
[1]an!
[1]Nachdem
[1]er
[1]aber
[1]dies
[1](jetzt)[a]
[1](in der Folge)[pt]
[1]gesagt
[1]hatte,
[1]hauchte
[1]er
[1](de facto)[a]
[1]den
[1]Geist
[1]aus.

47.) 47.)

pt a2 no ma ig
ἰδὼν
Als (jetzt) Gewahrthabender
(jetzt) Wahrgenommenhabender

δὲ ὁ
aber der

ℵ, B, C: no ma
|ἑκατοντ-άρχης|
|Hundertschafts-Anfangsfunktion Innehabende|
|Anfangsfunktion-einer Hundertschaft Innehabende|
|Hundertschaftsanführerfunktion Innehabende|
|Hauptmannsfunktion Innehabende|

[ℵ², A, R: no ma]
[ἑκατοντ-άρχος]
[Hundertschafts-Anfängliche]
[am Anfang einer Hundertschaft Stehende]
[Hundertschaftsanführe]
[Hauptmann]

pt a2 ak ne md dp kt
τὸ γενόμενον
das (de facto) individuell Gewordenseiende
(de facto) individuell Geschehenseiende,
(de facto) sich Entwickelthabende

ℵ, ℵ², B: 3 p ipe [A, C, R: 3 p a1 ig]
|ἐδόξαζεν| [ἐδόξασεν]
|eine gute Meinung bestätigte er| [(de facto) eine gute Meinung bestätigte er]
|die Bewährtheit anerkannte er| [(de facto) die Bewährtheit anerkannte er]
|verstärkt beherrlichte er| [(de facto) verstärkt beherrlichte er]
|verherrlichte er| [(de facto) verherrlichte er]
|Lichtabstrahlung ermöglichte er| [(de facto) Lichtabstrahlung ermöglichte er]

prp ak ak ma
τὸν θεὸν
in Bezug auf den Einsetzer
in Bezug auf Absetzer
- Schauenden
- Gott
in Bezug auf

pt pr no ma
λέγων
als Wortender
die Worte Gebrauchender
Sagender

ℵ, ℵ² [A, B, C, R]
|ὅτι|
|daß| [:]
|:|

av no m
ὄντως ὁ ἄν-θρ-ωπος
seiend der Hinauf-Gewandt-Eraugende
wirklich der empor-ragend-Augende
der Hinauf-Gedrehte
der Mannes-Auge
das Antlitz²-des Mannes¹
das Angesicht²-des Mannes¹
der Mensch,

pn no ma aj no ma 3 p ipe
οὗτος δί-καιος ἦν
dieser, durchweg-brennend war er !
aufzeigend
gerecht
rechtgemäß

[1]aL, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben:
„Aber als der Hauptmann
das (de facto)[a] individuell geschehenseiende (jetzt)[a] (in der Folge)[pt] wahrgenommenhatte,
bestätigte er in Bezug auf den Gott (de facto)[a] eine gute Meinung, indem er (wie folgt)[pt] sagte:“
[1]aL, Codex Vaticanus schreibt (nur kein geschriebener Doppelpunkt):
„Aber als der Hauptmannsfunktion Innehabende
das (de facto)[a] individuell geschehenseiende (jetzt)[a] (in der Folge)[pt] wahrgenommenhatte,
bestätigte er in Bezug auf den Gott eine gute Meinung, indem er (wie folgt)[pt] sagte:“
[1]aL, Codex Ephraemi schreibt:
„Aber als der Hauptmannsfunktion Innehabende
das (de facto)[a] individuell geschehenseiende (jetzt)[a] (in der Folge)[pt] wahrgenommenhatte,
bestätigte er in Bezug auf den Gott (de facto)[a] eine gute Meinung, indem er (wie folgt)[pt] sagte:“

[1]Aber
[1]als
[1]der
[1]Hauptmannsfunktion Apg 10.1+2
[1]Innehabende
[1]das
[1](de facto)[a]
[1]individuell
[1]geschehenseiende
[1](jetzt)[a]
[1](in der Folge)[pt]
[1]wahrgenommen
[1]hatte,
[1]bestätigte
[1]er
[1]in
[1]Bezug
[1]auf
[1]den
[1]Gott
[1]eine
[1]gute
[1]Meinung, Luk 2.20
[1]indem
[1]er
[1](wie folgt)[pt]
[1]sagte:
Der
dieser
Mensch
war
wirklich
aufzeigend!

[1]aL,
2. Korrektor Codex Sinaiticus
schreibt:
„Aber
als
der
Hauptmann
das
(de facto)[a]
individuell
geschehenseiende
(jetzt)[a]
(in der Folge)[pt]
wahrgenommen
hatte,
bestätigte
er
in
Bezug
auf
den
Gott
eine
gute
Meinung,
indem
er
(wie folgt)[pt]
sagte:“

48.) 48.)

aj no ma pl

| | | |
|---|---|---|
| καὶ | πάντες | οἱ |
| Und | alle | die |

pt a2 no ma pl md dp ig

συν-παρα-γενόμενοι

(*de facto*) i*ndividuel*l zusammen-herbei *zum Ort des* Werdens ge*komm*enseienden
(*de facto*) i*ndividuel*l zusammen-herbei *zum Ort des* Geschehens ge*komm*enseienden

| no ma pl | ϰ: prp ak | [A, B, C, R: prp ak] |
|---|---|---|
| ὄχλοι | \|εἰς\| | [ἐπὶ] |
| Belästigenden | \|hinein in\| | [auf *zu*] |
| Mengen | \|[h]in *Richtung auf*\| | |
| *Volks*mengen | | |

| | ak fe | pn ak fe |
|---|---|---|
| τὴν | θε-ωρίαν | ταύτην |
| das | *zum* Sehen[2]-*Ge*setzte[1] | dieses |
| das | *An*sehen *des Werdens* | dieses |
| das | *An*sichtig*werd*en *des Geschehens*, | dieses, |
| das | Schauen *des Geschehens* | dieses |
| das | *Er*schauen *des Geschehens* | dieses |
| die | The-orie | diese |

| Variante 2: | ak fe | |
|---|---|---|
| (τὴν | θεω-ρίαν) | (ταύτην) |
| (den | *Rede*fluß[2]-*des Ein*setzers[1] | diesen) |
| (den | *Rede*fluß[2]-*des Ab*setzers[1] | diesen) |
| (den | *Rede*fluß[2]-*des* Schau*end*en[1] | diesen) |
| (den | Rede*fluß*[2]-Gottes[1] | diesen) |
| (die | Theo-rie | diese) |

ϰ, B, C, R:

*als*

pt a1 no ma pl ig

θε-ωρήσαντες

(*jetzt*) gesetztes-Gesehenhabende
(*jetzt*) *An*gesehenhabende
(*jetzt*) Geschauthabende
(*jetzt*) *Er*schauthabende

Variante 2

(θεω-ρήσαντες)

((*jetzt*) *den Ein*setzer-Fließenge*lass*enhabende)
((*jetzt*) *den Ab*setzer-Fließenge*lass*enhabende)
((*jetzt*) *den* GOTT-Fließenge*lass*enhabende)
((*jetzt*) Geschauthabende)
((*jetzt*) *Er*schauthabende)

pt a2 ak ne pl md dp kt

| | |
|---|---|
| τὸ | γενόμενον |
| die | (*de facto*) i*ndividuel*l Gewordenseienden |
| | (*de facto*) i*ndividuel*l Geschehenseienden, |
| | (*de facto*) sich Entwickelthabenden |

pt pr no ma pl

| | | |
|---|---|---|
| | τύπτοντες | τὰ |
| *als* | *sich* Schlagende | die |
| | *sich typisch Meiß*elnde | |
| | *sich als* Vorbild *Schlag*ende | |

| ak ne pl | 3 p pl ipe |
|---|---|
| στή-θη | ὑπ-έστρεφον |
| *als* ausgebreiteten Flächen-Gesetzten | unter*wegs*-wendeten sie |
| Brüste | zurück-kehrten sie. |

[1]aL, Codex Alexandrinus schreibt (fehlende Textpassage):
„Und all die (*de facto*)[a] i*ndividuel*l auf das dieses *An*sichtig*werd*en *des Geschehens zu*
zusammen herbei *zum Ort des* Geschehens ge*komm*enseienden *Volks*mengen
kehrten *als sich* die Brüste Schlagende zurück.“

[1]aL, Codex Vaticanus, Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben:
„Und all die (*de facto*)[a] i*ndividuel*l auf das dieses *An*sichtig*werd*en *des Geschehens zu*
zusammen herbei *zum Ort des* Geschehens ge*komm*enseienden *Volks*mengen
kehrten *als* die (*de facto*)[a] i*ndividuel*l geschehenseienden (*jetzt*)[a] *Er*schauthabende
*als sich* die Brüste Schlagende zurück.“

[1]Und
[1]all
[1]die
[1](*de facto*)[a]
[1]i*ndividuel*l
[1]h[in]
[1]*Richtung*
[1]*auf*
[1]das
[1]dieses
[1]*An*sichtig*werd*en
[1]*des*
[1]*Geschehens*
[1]zusammen
[1]herbei
[1]*zum*
[1]*Ort*
[1]*des*
[1]Geschehens
[1]ge*komm*enseienden
[1]*Volks*mengen
[1]kehrten
[1]*als*
[1]die
[1](*de facto*)[a]
[1]i*ndividuel*l
[1]Geschehenseienden
[1](*jetzt*)[a]
[1]*Er*schauthabende,
[1]*als*
[1]*sich*
[1]die
[1]Brüste
[1]Schlagende
[1]zurück.

| 49.) | | 49.) | |
|---|---|---|---|
| | 3 p pl plpe | | |
| | εἰσ-τήκεισαν | | |
| Stand genommen hatten sie | | {ebenfalls} | |
| Gestanden hatten sie | | | |
| | | aj no ma pl | |
| δὲ | | πάντες | |
| aber | | alle | |
| | | aj no ma pl | |
| οἱ | | γνωστοὶ | |
| die | | Bekannten, | |
| ϰ, C, R: 3 p gn ma | | [A, B, P 075: 3 p dt ma] | |
| \|αὐτοῦ\| | | [αὐτῷ] | |
| \|seinerseits\| | | [ihm] | |
| \|seine,\| | | | |
| ϰ B, P 075: prp gn | | [A, C, R] | |
| \|ἀπὸ\| | | | |
| \|von\| | | [von] | |
| | av | | |
| μακρό-θεν | | | |
| fern-gesetzt | | {dort} | |
| ferne | | | |
| | | [B, P 075] | |
| καὶ | | [αἱ] | |
| und | | [die] | |
| auch | | | |
| | no fe pl | | |
| γυναῖκες | | αἱ | |
| Weiber, | | die | |
| Frauen | | | |
| | | ϰ B, C: pt pr no fe pl | |
| | \|συν-α-κολου-θοῦσαι\| | | |
| \|zusammen-sich gleichverhaltend-anleimend-setzenden\| | | | |
| \|zusammen-sich gleichverhaltend anhaftend-setzenden\| | | | |
| \|zusammen-nachfolgenden\| | | | |
| \|zusammen-begleitenden\| | | | |
| \|zusammen-anhangenden\| | | | |
| | | [A, R: pt a1 no fe pl kt] | |
| | [συν-α-κολου-θήσασαι] | | |
| [(de facto) zusammen-sich gleichverhaltend-anleimend-gesetzthabenden] | | | |
| [(de facto) zusammen-sich gleichverhaltend anhaftend-gesetzthabenden] | | | |
| [(de facto) zusammen-nachgefolgtseienden], | | | |
| [(de facto) zusammen-begleitethabenden] | | | |
| [(de facto) zusammen-anhangthabenden] | | | |
| 3 p dt ma | | prp gn | |
| αὐτῷ | | ἀπὸ | |
| ihm | | von | |
| ihm | | | |
| ihm | | | |
| ihn | | | |
| ihm | | | |
| | | hebrÜ: gn fe | |
| τῆς | | Γαλιλαίας | |
| dem | | Bezirk | |
| der | | Galiläa | |
| | | pt pr no fe pl | |
| | | ὁρῶσαι | |
| als | | Sehende | |
| | pn ak ne pl | | |
| ταῦτα | | | |
| diese | | Dinge. | |

[1]aL, Codex Vaticanus und Papyrus 075 schreiben:
„Es hatten aber all die ihm Bekannten und die Weiber,
ja die ihm von der Landschaft Galiläa zusammen nachfolgenden,
{ebenfalls} von Ferne als als diese Dinge Sehende {dort} gestanden,“

[1]aL, Codex Ephraemi schreibt:
„Es hatten aber all seine [d] Bekannten und Weiber,
ja die ihm von der Landschaft Galiläa zusammen nachfolgenden,
{ebenfalls} von Ferne als als diese Dinge Sehende {dort} gestanden,“

[1]aL, Textus Receptus schreibt:
„Es hatten aber all seine [d] Bekannten und Weiber,
ja die ihm (de facto)[a] von der Landschaft Galiläa zusammen nachgefolgtseienden,
{ebenfalls} von Ferne als als diese Dinge Sehende {dort} gestanden,“

| | |
|---|---|
| [1]Es | |
| [1]hatten | |
| [1]aber | |
| [1]all | |
| [1]seine [d] Bekannten | Ps 88.9 |
| [1]und | |
| [1]Weiber, | |
| ja | |
| [1]die | |
| [1]ihm | |
| [1]von | |
| [1]der | |
| [1]Landschaft | |
| [1]Galiläa | |
| [1]zusammen | |
| nachfolgenden, | |
| [1]{ebenfalls} | |
| [1]von | Ps 38.12 |
| [1]ferne | |
| [1]als | |
| [1]diese | |
| [1]Dinge | |
| [1]{dort} | |
| [1]Sehende | Spr 14.32 |
| [1]gestanden. | |

[1]aL,
Codex Alexandrinus
schreibt:
„Es
hatten
aber
all
die
ihm
Bekannten
und
Weiber,
ja
die
ihm
(de facto)[a]
von
der
Landschaft
Galiläa
zusammen
nachgefolgtseienden,
{ebenfalls}
von
Ferne
als
diese
Dinge
Sehende
{dort}
gestanden,“

ohne (...) a+pt lesbar

Übersetzung siehe Text

der Doppelhöhe
dem Hohen Doppel
Joseph von Arimathäa
-
infolgedessen Totenverbringung
Grabhineinlegung
Bestattung
-
Weiber
Frauen

50.) 50.)

2 p a2 i! md ig / ij

καὶ ἰδοὺ
Und (jetzt) individuell gewahre du
(jetzt) individuell wahrnehme du

!:

no ma

ἀνὴρ
Mann, irgend
irein,

prp dt

infolge von dem,
infolge von dem,
infolge von dem,
imit dem

*dt ne

ὀ-νόματί
**welches-Denken Bestimmendes ist der
*welches-bestimmungsgemäß ist,
welches-gesetzmäßig ist
Namen

no ma

Ἰωσήφ
Hinzufüger / er fügt hinzu / er wirkt hinzufügend
Joseph

(NÜ)

(Ἰ-ωσὴφ)
(der Werdenmachende-sammelt weg / -faßt zusammen)
(JaH-sammelt weg / -faßt zusammen)
(J-oseph)

(NÜ)

(Ἰ-ωσὴφ)
(des Werdenmachenden-Schiff)
(JaHs-Schiff)
(J-oseph),

no ma

βουλευτὴς
irgend sich auf ein Ziel Werfender irgend
irein, Ratsherr, irein

pt pr no ma

ὑπ-άρχων
im unteren-Anfang als Ausgangspunkt der Daseinsgrundlage Habender
im unteren-Beginn als Ausgangspunkt der Daseinsgrundlage Habender
Besitztumhabender

ϰ, C, P 075 no ma

καὶ ἀνὴρ
irgend und Mann,
irein,

aj no ma

ἀγαθὸς
irgend geführter irgend
irein, zur Führung befähigter, irein,
guter

ϰ, A, C, R aj no ma

καὶ δί-καιος
und durchweg-Brennender irgend
Aufzeigender irein,
Gerechter
Rechtgemäßer

Joseph
von
Arimathäa
-
Grabhineinlegung
-
Weiber

Und
nimm
(jetzt)a
individuell
wahr!:
irEin
Mann,
infolge
von
dem,
welches
bestimmungsgemäß*
Joseph
ist,
irein
Ratsherr,
irein
Besitztumhabender,
und
irein
zur
Führung
befähigter
Mann
und
irein
aufzeigender,

Mat 27.57-61
Mar 15.42-47
Joh 19.38-42

*e: in Mat 27.57 = **ak

Freund von Nikodemus
Joh 3.1 ff
Joh 19.38+39

| 51.) | 51.) | |
|---|---|---|
| | pn no ma | |
| | οὗτος | [1]- dieser |
| | dieser | [1]war |
| | | [1]*ein* |
| | οὐκ | [1]*individuell* |
| | nicht | [1]*beim* |
| | k*eine* | [1]Zusammen*treffen* |
| | 3 p ipe | [1]dem |
| | ἦν | [1]Rat*schluß* |
| | war er | [1]und |
| | | [1]ihrer [d] Praxis |
| | *ein* | [1]*dies*bezüglich |
| | | [1]k*eine* |
| | ℵ, C: pt pr no ma md/ps | [1]*Zustimmung* |
| | \|συν-κατα-τιθέμενος\| | [1]Setzender -, |
| | \|*individuell* *beim* Zusammen*treffen*-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Setzender | |
| | \|*individuell* gemäß-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Setzender | |
| | pt pr no ma md/ps (Zustand) | |
| | *zum beim* Zusammen*treffen*-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Setzen *Veranlaß*tseiender | |
| | *zum* gemäß-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Setzen *Veranlaß*tseiender | |
| | pt pr no ma md/ps (Vorgang) | |
| | *zum beim* Zusammen*treffen*-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Setzen *Veranlaß*twerdender\| | [1]aL, |
| | *zum* gemäß-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Setzen *Veranlaß*twerdender\| | Codex Alexandrinus, |
| | [A, B, R, P 075: pt pe no ma md/ps | Codex Vaticanus, |
| | [συγ-κατα-τεθειμένος] | Textus Receptus |
| | [*individuell* *beim* Zusammen*treffen*-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Gesetzthabender | und |
| | [*individuell* gemäß-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Gesetzthabender | Papyrus 075 |
| | pt pe no ma md/ps (Vorgang + Zustand)] | schreiben: |
| | *zum beim* Zusammen*treffen*-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Setzen *Veranlaß*tworden(seiend)er] | „- dieser |
| | *zum* gemäß-*dies*bezüglich-*Zustimmung* Setzen *Veranlaß*tworden(seiend)er] | war |
| | | *ein* |
| | τῇ | *individuell* |
| | dem | *beim* |
| | dt fe | Zusammen*treffen* |
| | βουλῇ | dem |
| | Zielwurf | Rat*schluß* |
| | Rat | und |
| | Rat*schluß* | ihrer [d] Praxis |
| | | *dies*bezüglich |
| | καὶ | k*eine* |
| | und | *Zustimmung* |
| | | Gesetzthabender -,“ |
| | τῇ | |
| | der | |
| | dt fe | |
| | πράξει | |
| | Praxis, | |
| | Anwendung | |
| | 3 p pl gn ma | |
| | αὐτῶν | |
| | ihrer. | |

1 Mos 37.21

ohne (...) a+pt lesbar

prp gn
ἀπὸ
*ein* **von** *der*

hebrÜ: gn fe
Ἁ-ρμα-θαίας
**die[1]-Doppel[3]-Höhe[2]**
**das-Hohe-Doppel**
**A-rima-thäa**

*seiender*,

gn fe
πόλεως
*einer* **Vieligen**
*aus* **viel***en Bestehe***nden**
**Stadt,**

hebrÜ: aj gn ma pl
τῶν Ἰουδαίων
**der** **Dankendem** *Zugehöri***gen**
**Bekennendem** *Zugehöri***gen**
**Judäer**
**Juden,**

pn no ma [A, R]
ὃς [καὶ]
**welcher** **[auch]**

3 p ipe md/ps dp
προσ-εδέχετο
**sich zu** *hin-als* **empfang***sbereit erwies***en hat er**

3 p ipe md/ps dp (Vorgang)

**zu** *hin***-empfang***sbereit* **war er**

[A, R: pn no ma]
[καὶ αὐτὸς]
[auch selber]

ak fe
τὴν βασιλείαν
**der** *voran***schreitenen** *Mann***schaft**
**der** *den Fort***schritt** *bestimm***ende** *Mann***schaft**
**der** *auf Veranlassung auf***gestiegene** *Mann***schaft**
**der** **Regentschaft**
**der** **Regierung**
**der** **König***sherr***schaft**
**dem** **König***reich***ch**
**dem** **Königtum**
**der** **basis***gebend***e** *Mann***schaft**

gn ma
τοῦ θεοῦ
**des** *Ein***setzers**
*Ab***setzers**
**Schau***end***en**
**Gottes,**

52.) 52.)
pn no ma
οὗτος
**dieser** *als*

pt a2 no ma dp kt
προσ-ελθὼν
(*de facto*) **zu-Gekommen**seiender
(*de facto*) *sich wie ein* **Pros-Elyt** *Verhalt***enhabender**

ltÜ: dt ma
τῷ Πιλάτῳ
**dem** **Wurfspieß***haben***den**
*mit* **Wurfspieß***en Bewaffnet***en**
**Pilatus**

3 p a1 md ig ak ne
ᾐτήσατο τὸ σῶμα
(*jetzt*) ursäch*ich ersuch***te er** **den** **Leib**
(*jetzt*) **erbat er** **Körper**
(*jetzt*) **forderte er**

hebrÜ: gn ma
τοῦ Ἰη-σοῦ
**des** **Er** *mach***t Werden-***bedeutet* **Rettung**
**Er wird** *fortdauernd-bedeutet* **Rettung**
**werden***mach***enden-Rettrufer**
**Werden***mach***enden,-***der* **Rettung** *ist*,
<**JHWH**>,-*der* **Rettung** *ist*,
<**JHWHs**>**-Rettrufer**
**Je-sus.**
**Jöho-schua**

*einer*
*der*
**von**
*der*
*Stadt*
**Arimathäa**
*war*,
*einer*
**Stadt**
**der**
**Juden,**
**welcher**
**[auch]**
**zu**
**der**
**König***sherr***schaft**
**des**
**Gottes**
**[auch**
**selber]**
*hin*
**empfang***sbereit* Luk 2.38
**war,**

**dieser,**
*nachdem*
*er*
(*de facto*)[a]
(*im weiteren Zeitlaufs*)[pt]
**zu**
**dem**
**Pilatus**
**gekommen**
**war,**
**erbat**
**er**
*individuell*
(*jetzt*)[a]
**den**
**Leib**
**des**
**Jesus.**

ohne (...) a+pt lesbar

| 53.) | | 53.) |
|---|---|---|
| | | |
| καὶ | | |
| Und | als | |
| | | |
| | | pt a2 no ma kt |
| | καθ-ελὼν | |
| | (*de facto*) *von oben* **herab-Entheben***lass***enhabender** | |
| | (*de facto*) *all***bezüglich-Entheben***lass***enhabender** | |
| | (*de facto*) *von oben* **herab-***Be***seitigen***lass***enhabender** | |
| | (*de facto*) *all***bezüglich-***Be***seitigen***lass***enhabender** | |
| | | |
| a, B, C, P 075: 3 p ak ne | | [A, R: 3 p ak ne] |
| | | [αὐτὸ] |
| \|*es*\| | | [es] |
| \|*ihn*\| | | [*ihn*], |
| | | |
| 3 p a1 ig | | 3 p ak ne |
| ἐν-ετύλιξεν | | αὐτὸ |
| (*jetzt*) ein-wickelte er | | es |
| | | *ihn* |
| | | |
| | | hebrÜ: dt fe |
| | | σινδόνι |
| *eine* | | *Leinwand aus der* **Zahngemalmten** |
| | | *Leinwand aus der* **Elfenbeingemalmten** |
| | | **sindike***'ische Leinwand* |
| | | **Sindon***leinwand*, |
| | | |
| | | 3 p a1 ig |
| καὶ | | ἔθηκεν |
| und | | (*jetzt*) *bei***setzte** er |
| | | |
| ℵ, B, C, D: 3 p ak ma | | [A, R, P 075: 3 p ak ne] |
| \|αὐτὸν\| | | [αὐτὸ] |
| \|ihn\| | | [es] |
| | | [*ihn*] |
| | | |
| prp dt | | |
| ἐν | | |
| in | | *einer* |
| | | |
| dt ne | | |
| μνήματι | | |
| **Erinnerung***stätte* | | *einer* |
| **Gedächtnis***gruftstätte* | | |
| **Gruft***stätte*, | | |
| | | |
| | | aj dt ne |
| | | λα-ξευτῷ |
| *in* | | *einen* **Steinblock-gemeißelten** |
| *in* | | *das* **Gestein-gemeißelten** |
| | | |
| | | |
| οὗ | | οὐκ |
| wo | | nicht |
| | | |
| 3 p ipe | | pn no ma |
| ἦν | | οὐ-δ-εἷς |
| war er | | nicht-aber-einer |
| | | |
| ℵ, C, R: av | | [A, B, P 075: av] |
| \|οὐ-δέ-πω\| | | [οὔ-πω] |
| \|nicht-aber-*auch*-noch\| | | [nicht-*auch* noch] |
| | | |
| | | pt pr no ma md/ps dp |
| | | κείμενος |
| *als* | | *individuell* **Liegender** |
| | | |
| pt pr no ma md/ps dp (Zustand) | | pt pr no ma md/ps dp (Vorgang) |
| | | |
| **Gelegtseiender** | | **Gelegtwerdender.** |

[1]aL, **Codex Alexandrinus**, **Textus Receptus** und **Papyrus 075** schreiben (`den Leib`):
„*ihn*“

| | |
|---|---|
| **Und** | |
| *nachdem* | |
| *er* | |
| *ihn** | *e: den Leib |
| (*de facto*)[a] | |
| (*allmählich*)[pt] | |
| *von* | |
| *oben* | |
| **herab** | |
| **entheben** | |
| *lass***en** | |
| **hat***te*, | |
| **wickelte** | |
| **er** | |
| *ihn** | *e: den Leib |
| (*jetzt*)[a] | |
| **in** | |
| *eine* | |
| **Sindon***leinwand* | |
| *e***in** | |
| **und** | |
| **setzte** | |
| [1]**ihn*** | *e: Jesus |
| (*jetzt*)[a] | |
| **in** | |
| *einer* | |
| *ins* | |
| **Gestein** | |
| **gemeißelten** | 5 Mos 21.23<br>Jes 53.9<br>Apg 13.29 |
| **Gruft***stätte* | |
| *bei*, | |
| **wo** | |
| **nicht,** | |
| *ja* | |
| **nicht** | |
| **aber** | |
| **einer,** | |
| **aber** | |
| *auch* | |
| **noch** | |
| **nicht** | |
| *als* | |
| *individuell* | |
| **Liegender** | |
| **war.** | |

54.) 54.)

[A]

καὶ [ἡ]
Und [der]

no fe 3 ipe

ἡμέρα ἦν
Tag war er

ℵ, B, C, R Scr:

|der

gn fe

|παρα-σκευῆς|
Gerät2-Bereitstellung1|
|Bereitstellung-der Ausstattungsgegenstände|

[A, R Ste:

[die

no fe]

[παρα-σκευή]
Gerät2-Bereitstellung1]
[Bereitstellung-der Ausstattungsgegenstände],

καὶ
und {schon}
{bereits}

no ne

σάββατον
der Sitzabend
Aufhörabend
siebente Abend
Sabbatabend

3 p ipe

ἐπ-έφωσκεν
auf-lichtete er
sich gebietsumfassend-durch Licht erhellte er
dämmerte er.

1aL, Codex Vaticanus und Textus Receptus Stephanus schreiben:
„Und es war Tag, ja die Bereitstellung der Ausstattungsgegenstände,
und der Sabbatabend dämmerte {schon}."

1Und
1es
1war
1Tag
1der
1Bereitstellung
1der
1Ausstattungsgegenstände,
1und
1der
1Sabbatabend
1dämmerte
1{schon}.

2 Mos 12.6
2 Mos 20.10

1aL,
Codex Alexandrinus
schreibt:
„Und
es
war
der
Tag
der
Bereitstellung
der
Ausstattungsgegenstände,
und
der
Sabbatabend
dämmerte
{schon}."

55.) 55.)

pt a1 no fe pl kt
κατα-κολου-θήσασαι
(*De facto*) hinab-*sich* gleich*verhalt*end-anleimen*d*-Gesetzthabenden
(*De facto*) hinab-*sich* gleich*verhalt*end anhaften*d*-Gesetzthabenden
(*De facto*) hinab-Gefolgtseienden
(*De facto*) hinab-Begleitethabenden
(*De facto*) hinab-Anhangthabenden

[1]Aber
[1]*die*
[1]Weiber,
[1]*die*
[1](*de facto*)[a]
[1](*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt]
[1]hinabgefolgt
[1]waren,
[1]welche
[1]irgend
[1](*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt]
[1]*solche*
[1]waren,
[1]*die*
[1]zusammen
[1]*mit*
[1]ihm
[1]aus
[1]der
[1]*Landschaft*
[1]Galiläa
[1]gekommen
[1]waren,
erschauten
(*jetzt*)[a]
*individuell*
die
Gruft
und
wie
sein [d] Leib
(*jetzt*)[a]
*bei*gesetzt
wurde.

ℵ, A, C, R
δὲ
aber
|*die*|

[B, P 075] no fe pl
[αἱ]
[die]
γυναῖκες
Weiber,
Frauen

pn no fe pl
αἵ-τινες
welche-irgend

3 p pl ipe
ἦσαν
waren sie

pt pe no fe pl dp
συν-ελθηλυθυῖαι
samt-Gekommenseiende
zusammen *mit*-Gekommenseiende

ℵ, B, R, P 075: prp gn
ἐκ
aus

hebrÜ: gn fe
τῆς
dem
der
Γαλιλαίας
Bezirk
Galiläa

3 p dt ma
αὐτῷ
ihm,

3 p pl a1 md dp ig
ἐθεάσαντο
(*jetzt*) *individuell* als *Ge*setztes *sah*en sie
(*jetzt*) *individuell* erschauten sie
(*jetzt*) sich *an*schauten sie

ak ne
τὸ
die
μνημεῖον
Erinnernde
Gedächtnis*gruft*
Gruft,

καὶ
und
ὡς
wie

3 p a1 ps ig
ἐτέθη
(*jetzt*) *bei*gesetzt wurde er
τὸ
der

no ne
σῶμα
Leib,
Körper

3 p gn ma
αὐτοῦ
seiner*seits*
sein.

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt („**aus der** *Landschaft* **Galiläa**“ `fehlt`):
„**Aber** *die* **Weiber,**
*die* (*de facto*)[a] (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] **hinabgefolgt waren,**
**welche irgend** (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] *solche* **waren,**
*die* **zusammen** *mit* **ihm gekommen waren,**“
[1]aL, **Codex Vaticanus** und **Papyrus 075**schreiben:
„**Aber die Weiber,**
*die* (*de facto*)[a] (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] **hinabgefolgt waren,**
**welche irgend** (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] *solche* **waren,**
*die* **zusammen** *mit* **ihm aus der** *Landschaft* **Galiläa gekommen waren,**“

ohne (...) [a+pt] lesbar

| 56.) | | 56.) | | |
|---|---|---|---|---|
| | | pt a1 no fe pl kt | | |
| | | ὑπο-στρέψασαι | Und | |
| | *Als* | (*de facto*) unter*wegs*-Gewendethabende | *nachdem* | |
| | | (*de facto*) Zurückgekehrtseiende | *sie* | |
| | | 3 p pl a1 ig | (*de facto*)[a] | |
| | δὲ | ἡτοίμασαν | (*im weiteren Zeitverlauf*)[pt] | |
| | aber | (*jetzt*) bereiteten sie | zurückgekehrt | |
| | | (*jetzt*) bereit*mach*ten sie | waren, | |
| | | (*jetzt*) bereit*stell*ten sie | bereiteten | |
| | ak ne pl | | sie | |
| | ἀρώματα | καὶ | (*jetzt*)[a] | |
| | Gewürzkräuter | und | Duftstoffe | 2 Chr 16.14 |
| | Duftstoffe | | und | Mat 26.7 |
| | gerupfte *Kräut*er | | Salböle. | Mar 14.3 |
| | Aromen | | *Das* | Joh 12.3 |
| | ak ne pl | | bleibt: | |
| | μύρα | καὶ | Und | |
| | Würzöle | Und | dem | |
| | Salböle. | | Sabbat | 2 Mos 16,29 |
| | | | *gemäß* | 2 Mos 20.8+10 |
| | *prp ak* | | *verhiel*ten | 2 Mos 31.15 |
| | | τὸ | sie | |
| | *gemäß* | dem | *sich* | |
| | | hebrÜ: ak ne | (*jetzt*)[a] | |
| | μὲν | σάββατον | gemäß | |
| | *das* bleibt | Sitzen | dem | |
| | | Aufhören | Gebot | |
| | | Siebenten | still. | |
| | | Sabbat | | |
| | 3 p pl a1 ig | prp ak | | |
| | ἡσύχασαν | κατὰ | | |
| | (*jetzt*) *sich* still *verhiel*ten sie | gemäß | | |
| | (*jetzt*) Still*schweigen bewahr*ten sie | | | |
| | | ak fe | | |
| | τὴν | ἐν-τολήν | | |
| | der | In*nen*-Vollendigung | | |
| | dem | In*nen*-Ziel | | |
| | dem | Gebot. | | |